विनिमय विपत्र

8

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के उपरांत आप:

- विनिमय विपत्र एवं प्रतिज्ञा-पत्र का अर्थ बता सकेंगे;
- विनिमय विपत्र और प्रतिज्ञा-पत्र का अंतर कर सकेंगे;
- विनिमय विपत्र के गुण बता सकेंगे;
- विनिमय लेन-देन से संबंधित शब्दावली की व्याख्या कर सकेगे;
- विनिमय विपत्र लेन-देनों को रोजनामचे में अभिलेखित कर सकेंगे;
- विनिमय विपत्र के भुनाने अनादरण एवं नवीनीकरण से संबंधित लेन-देनों को अभिलेखित कर सकेंगे;
- प्राप्य विपत्र और देय विपत्र के उपयोग की व्याख्या कर सकेंगे;
- सहायतार्थ-विपत्र का अर्थ और उपयोग समझ सकेंगे।

व्यापार में माल का क्रय एवं विक्रय नकद और उधार पर किया जाता है। यदि माल का क्रय अथवा विक्रय नकद होता है, तो ऐसी स्थिति में भुगतान तत्काल कर दिया जाता है। दूसरी तरफ, यदि व्यापारी उधार लेन-देन करता है और सौदों का मूल्य तुरंत न चुका कर भविष्य में चुकाता है तो ऐसी स्थिति में भावी भुगतान की समस्या का समाधान साख-पत्रों के प्रयोग से संभव होता है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत माल खरीदने वाला व्यक्ति माल बेचने वाले व्यक्ति को एक निश्चित अवधि में भुगतान करने का आश्वासन देता है।

भारत में साख-पत्रों का प्रचलन बहुत प्राचीन है तथा इसे हुंडी कहा जाता है। हुंडी भारतीय भाषा में लिखी जाती है और अनेक प्रकार की होती है (देखें बॉक्स 1)। आधुनिक समय में इन साख-पत्रों को विनिमय विपत्र अथवा प्रतिज्ञा-विपत्रों के नाम से जाना जाता है।

विनिमय विपत्र एक शर्त रहित लिखित आदेश होता है, जिसमें उसको लिखने वाला किसी व्यक्ति विशेष को एक निश्चित अवधि में भुगतान की शर्तविहीन आज्ञा देता है जबकि प्रतिज्ञा-विपत्र एक लिखित हस्ताक्षर सहित बिना शर्त का प्रपत्र है जिसमें देनदार निश्चित तिथि पर प्रदत्त मूल्य का भुगतान करने की प्रतिज्ञा करता है। भारत में ये साख-पत्र भारतीय पराक्रम्य विलेख अधिनियम 1881 द्वारा नियंत्रित होते हैं।

बॉक्स - 1

हुंडी और उसके प्रकार

हमारे देश में विभिन्न प्रकार की हुंडियों का प्रयोग होता है जिनमें से सामान्यतया प्रयोग में आने वाली हुंडियों के विषय में चर्चा करेंगे।

© NCERT not to be republished

शहजोग हुंडी : यह हुंडी एक व्यापारी द्वारा दूसरे व्यापारी पर नामित की जाती है जिसमें यह इंगित किया जाता है कि आहार्यी शाह को भुगतान करे। शाह एक सम्मानीय एवं जिम्मेदार व्यक्ति होता है जिसकी बाजार में अपनी एक पहचान होती है। हुंडी अनेक व्यक्तियों के माध्यम से शाह तक पहुँचती है जो सामान्य पूछताछ के पश्चात आहार्यी के समक्ष भुगतान की स्वीकृति हेतु प्रस्तुत की जाती है।

दर्शनी हुंडी : इस हुंडी का भुगतान तत्काल किया जाता है। धारक द्वारा इस हुंडी को एक नियत समय अवधि के अन्दर भुगतान हेतु प्रस्तुत करना होता है। दर्शनी हुंडी मांग विपत्र के समान होती है।

मुद्दती अथवा मियादी हुंडी : मुद्दती अथवा मियादी हुंडी का भुगतान एक निश्चित समय अवधि के पश्चात किया जाता है। यह हुंडी समय अवधि विपत्र के समान होती है।

हुंडी के कुछ अन्य प्राकर हैं : नामजोग हुंडी, धानीजोग हुंडी, जवाबी हुंडी, हुकनामी हुंडी, फरमान जोग हुंडी इत्यादि।

8.1 विनिमय-विपत्र की परिभाषा

भारतीय पराक्रम्य विलेख अधिनियम 1881 के अनुसार विनिमय विपत्र की परिभाषा इस प्रकार है - "विनिमय विपत्र एक शर्त रहित लिखित आज्ञा पत्र है, जिसमें लिखने वाला किसी व्यक्ति को यह आज्ञा देता है कि वह एक निश्चित राशि या तो स्वयं उसे या उसकी आज्ञानुसार किसी अन्य व्यक्ति को या उस विनिमय-विपत्र के धारक को माँगने पर या एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर दे।"

उपरोक्त परिभाषा के अनुसार विनिमय-विपत्र की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं-

- विनिमय विपत्र लिखित होता है। यह मौखिक नहीं हो सकता।
- इसमें राशि के भुगतान की आज्ञा निहित होती है।
- इसमें शर्त रहित आज्ञा निहित होती है।
- इसमें विपत्र लिखने वाले के हस्ताक्षर होते हैं।
- विनिमय विपत्र में लिखित राशि निश्चित होती है।
- विनिमय विपत्र में भुगतान की तिथि निश्चित होती है।
- इस विपत्र द्वारा उस व्यक्ति विशेष को आज्ञा दी जाती है, जिसके नाम पर विनिमय विपत्र लिखा जाता है।
- इसमें लिखित निश्चित राशि माँग पर देय अथवा निश्चित समय के बाद दी जाती है।
- अधिनियम के अनुसार इस विलेख पर मुद्रांक होना अनिवार्य है।

विनिमय विपत्र लेनदार द्वारा अपने देनदार पर लिखा जाता है। अत: विनिमय विपत्र का किसी निश्चित व्यक्ति विशेष द्वारा अथवा उसकी ओर से किसी अन्य व्यक्ति विशेष द्वारा स्वीकृत होना एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इस संबंध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि विनिमय-विपत्र स्वीकृत होने से पूर्व ड्राफ्ट कहलाता है तथा स्वीकृति के पश्चात ही इसे विनिमय विपत्र कहते हैं। उदाहरण के लिए, अमित ने रोहित को 10,000 रु. का उधार माल बेचा। देय तिथि पर निश्चित भुगतान प्राप्ति हेतु अमित ने रोहित पर तीन महीने की अवधि का एक विनिमय विपत्र लिखा। ध्यान देने योग्य बात यह है

© NCERT not to be republished

कि रोहित इस विपत्र को स्वीकृत कर हस्ताक्षरित करेगा तथा स्वीकृति की सूचना अमित को देगा, तभी यह विनिमय-विपत्र कहलाएगा, अन्यथा इसे ड्राफ्ट कहेंगे।

8.1.1 विनिमय-विपत्र के पक्षकार

विनिमय-विपत्र के प्रायः तीन पक्षकार होते हैं

- *आहर्ता/बिलकर्त्ता* - यह व्यक्ति, जो विपत्र लिखता है तथा उस पर अपने हस्ताक्षर करके एक निश्चित राशि के भुगतान का आदेश देता है, उसे आहर्ता/*बिलकर्त्ता* कहते हैं। यह व्यक्ति विशेष प्रायः माल का विक्रेता/लेनदार होता है।
- *आहार्यी/स्वीकारकर्ता* - जिस व्यक्ति पर विनिमय-विपत्र लिखा जाता है अर्थात् वह व्यक्ति जिसे एक निश्चित राशि के भुगतान का आदेश दिया जाता है उसे अहार्यी/स्वीकारकर्त्ता कहते हैं। यह व्यक्ति प्रायः माल का क्रेता अथवा देनदार होता है।
- *पानेवाला :* वह व्यक्ति जिसे विनिमय-विपत्र का भुगतान मिलता है, विनिमय-विपत्र पानेवाला कहलाता है। आहर्ता/*बिलकर्त्ता* यदि भुगतान की तिथि तक बिल अपने पास रखता है तब आहर्ता ही भुगतान पानेवाला व्यक्ति होगा। किन्तु निम्न परिस्थितियों में भुगतान पाने वाला व्यक्ति अलग हो सकता है:
  (अ) यदि आहर्ता/*बिलकर्त्ता* विपत्र को भुनवा लेता है तो ऐसी दशा में भुगतान पाने वाला व्यक्ति आहर्ता से भिन्न होगा;
  (ब) यदि आहर्ता/*बिलकर्त्ता* विपत्र को अपने लेनदार के पक्ष में बेचान करता है तो लेनदार राशि पाने वाला व्यक्ति बन जाएगा।

सामान्यतया आहर्ता और भुगतान पानेवाला व्यक्ति एक ही होता है। उस प्रकार आदेशित स्वीकारकर्त्ता और आहार्यी एक ही व्यक्ति होता है।

उदाहरण के लिए ममता ने ज्योति को 10,000 रु. का माल उधार बेचा। तत्पश्चात् ममता ने ज्योति पर तीन माह की भुगतान अवधि के लिए एक विपत्र लिखा। यहाँ पर ममता आहर्ता/*बिलकर्त्ता* है और ज्योति आहार्यी (स्वीकारकर्ता) है। यदि ममता तीन माह तक विपत्र अपने पास रखकर भुगतान प्राप्त करती है तो ममता भुगतान पाने वाली व्यक्ति मानी जाएगी। किन्तु, यदि ममता इस विपत्र को अपनी एक अन्य लेनदार, रुचि को हस्तांतरित करती है तब रुचि भुगतान पाने वाली व्यक्ति होगी। और यदि ममता इस विपत्र को बैंक से भुनवा लेती है तो बैंक भुगतान पाले वाला व्यक्ति माना जाएगा।

© NCERT not to be republished

ममता
10,000 रु.

1 अप्रैल, 2006
नयी दिल्ली

मुद्रांक

लिखित तिथि के तीन माह पश्चात, मुझे अथवा मेरे आदेशानुसार, 10,000 रुपए का भुगतान करें, जिसका प्रतिफल प्राप्त हो चुका है।

स्वीकृत
(हस्ताक्षर)
ज्योति
1.4.2006
73-बी, महिपालपुर
नयी दिल्ली-110 037

(हस्ताक्षर)
ममता
196, करोल बाग
नयी दिल्ली-110 005

सेवा में
ज्योति
73-बी, महिपालपुर
नयी दिल्ली-110 037

चित्र 8.1: *विनिमय-विपत्र का प्रारूप*

उपर्युक्त विनिमय विपत्र के प्रारूप में ममता आहर्ता और ज्योति आहार्यी है। चूंकि ज्योति ने विपत्र स्वीकृत किया है, इसलिए ज्योति स्वीकारकर्त्ता भी है। मान लीजिए ज्योति के स्थान पर विपत्र को अशोक ने स्वीकृत किया होता तो अशोक स्वीकारकर्त्ता माना जाता।

स्वयं जाँचिए - 1

विभिन्न विपत्र के संदर्भ में सही एवं गलत वाक्य को पहचानें:

(i) विनिमय विपत्र पर आहार्यी की स्वीकृति अनिवार्य है।
(ii) विनिमय विपत्र लेनदार द्वारा लिखा जाता है।
(iii) विनिमय विपत्र प्रत्येक नकद लेन-देनों के लिए लिखा जाता है।
(iv) माँग पर देय विनिमय विपत्र को समयावधि विपत्र कहते है।
(v) वह व्यक्ति जिसको विनिमय विपत्र का भुगतान किया जाता है भुगतान पानेवाला व्यक्ति कहलाता है।
(vi) एक विनिमय विलेख को लेखक द्वारा हस्ताक्षरित किया जाना आवश्यक नहीं है।
(vii) देखते ही भुगतान हुंडी दर्शनी हुंडी कहलाती है।
(viii) एक विनिमय विलेख का मुक्त रूप से हस्तांतरण नहीं किया जा सकता है।
(ix) प्रतिज्ञा पत्र को मुद्रित करना अनिवार्य नहीं है।
(x) विनिमय विपत्र पर समयावधि भुगतान निश्चित नहीं होता है।

© NCERT not to be republished

8.2 प्रतिज्ञा-पत्र

भारतीय पराक्रम्य विलेख अधिनियम 1881 के अनुसार प्रतिज्ञा-पत्र एक लिखित हस्ताक्षर सहित विपत्र है। (बैंक या करेंसी नोट नहीं) जिसको लिखने वाला बिना शर्त के एक निश्चित राशि किसी व्यक्ति को अथवा उसके आदेशानुसार किसी अन्य व्यक्ति को अथवा उस विपत्र के धारक को देने की प्रतिज्ञा करता है। किंतु रिर्जव बैंक ऑफ इंडिया के अधिनियम के अनुसार धारक के नाम के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति को प्रतिज्ञा-पत्र का भुगतान गैर-कानूनी है। इसलिए प्रतिज्ञा-पत्र धारक के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के नाम से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।
उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर प्रतिज्ञा-पत्र की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं-

- प्रतिज्ञा-पत्र लिखित होता है।
- इसमें शर्त रहित प्रतिज्ञा की जाती है।
- यह एक निश्चित व्यक्ति विशेष द्वारा लिखा जाता है तथा हस्ताक्षरित होता है।
- इसका भुगतान किसी व्यक्ति विशेष को किया जाता है।
- इसके अग्रभाग पर मुद्रांक का होना अनिवार्य है।

प्रतिज्ञा-पत्र की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि प्रतिज्ञा-पत्र का लेखक ही भुगतान करने की प्रतिज्ञा लेता है।

अशोक कुमार
30,000 रु.

नयी दिल्ली
1 अप्रैल, 2006

मुद्रांक

लिखित तिथि के तीन माह पश्चात, मैं श्री हरीश चंद्र 30,000 रुपए देने की प्रतिज्ञा करता हूँ, जिसका प्रतिफल प्राप्त हो चुका है।

सेवा में,

श्री हरीश चन्द्र	अशोक कुमार
24, अंसारी रोड	2, दरिबा कलां
दरियागंज,	चाँदनी चौक
नयी दिल्ली-110 002	नयी दिल्ली-110 006

चित्र 8.2 : *प्रतिज्ञा-पत्र का प्रारूप*

© NCERT not to be republished

8.2.1 प्रतिज्ञा-पत्र के पक्षकार

प्रतिज्ञा-पत्र में केवल दो पक्षकार होते हैं-

लेखक - यह वह व्यक्ति होता है, जो निश्चित राशि के भुगतान के लिए प्रतिज्ञा-पत्र लिखकर देता है। यह व्यक्ति साधारणतया ऋणी कहलाता है।

पाने वाला - यह वह व्यक्ति होता है, जिसको प्रतिज्ञा-पत्र की राशि का भुगतान किया जाता है। इस व्यक्ति के पक्ष में ही प्रतिज्ञा-पत्र लिखा जाता है। यह व्यक्ति ऋणदाता कहलाता है।

चित्र 8.2 में अशोक कुमार प्रतिज्ञा-पत्र का लेखक है तथा हरीश चंद्र भुगतान पाने वाला व्यक्ति है। यदि हरीश चंद प्रतिज्ञा-पत्र का बेचान रोहित को करता है तब रोहित भुगतान पाने वाला व्यक्ति होगा। यदि हरीश चंद्र स्वयं इस प्रतिज्ञा-पत्र को बैंक द्वारा भुनाता है तो वह स्वयं भुगतान पाने वाला व्यक्ति माना जाएगा।

बॉक्स - 2

विनिमय-विपत्र और प्रतिज्ञा-पत्र में अन्तर

ऋण दस्तावेजों के रूप में विनिमय विपत्र और प्रतिज्ञा-पत्र में अनेक समानताएं होते हुए भी निम्नलिखित मूलभूत अन्तर हैं:

क्र.सं.	*आधार*	*विनिमय विपत्र*	*प्रतिज्ञा-पत्र*
1.	लेखक	यह लेनदार द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।	यह देनदार द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।
2.	आदेश/प्रतिज्ञा एवं पक्षकार	इसमें भुगतान के लिए एक शर्त रहित आज्ञा होती है। इसमें तीन पक्षकार होते हैं - लेखक, देनदार और पाने वाला।	इसमें भुगतान के लिए लेखक द्वारा शर्त रहित प्रतिज्ञा होती है। इसमें केवल दो पक्षकार होते हैं। लेखक तथा लेनदार
3.	स्वीकृति	इसमें आदेशित व्यक्ति अथवा अदेशानुसार अन्य व्यक्ति द्वारा स्वीकृति अनिवार्य है।	इसमें स्वीकृति की आवश्यकता नहीं होती।
4.	भुगतान पाने वाला	इसमें लेखक और पाने वाला एक ही व्यक्ति हो सकता है।	इसमें लेखक और राशि पाने वाला व्यक्ति भिन्न-भिन्न होते हैं।
5.	नोटिस	विपत्र के अनादरण होने पर धारक द्वारा लेखक को नोटिस दिया जाता है।	इसमें, अनादरण की दशा में, कोई भी नोटिस नहीं दिया जाता।

चित्र 8.3 : *विनिमय-विपत्र और प्रतिज्ञा-पत्र में अंतर*

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिए - 2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) वह व्यक्ति जिसका नाम प्रतिज्ञा-पत्र पर भुगतान प्राप्ति हेतु अंकित किया जाता है, ---------- कहलाता है।

(ii) हस्ताक्षर द्वारा विपत्र के स्वामित्व हस्तांतरण प्रक्रिया को ------- कहते हैं।

(iii) वह व्यक्ति जो निश्चित राशि के भुगतान के लिए प्रतिज्ञा-पत्र लिखकर देता है ----- कहलाता है।

(iv) वह व्यक्ति जो प्रतिज्ञा-पत्र का बेचान अन्य व्यक्ति को करता है -------- कहलाता है।

8.3 विनिमय विपत्र के लाभ

आधुनिक व्यापार जगत में विनिमय विपत्र से निम्नलिखित लाभ हैं:

- *संबंधों की रूपरेखा* : विनिमय विपत्र उधार माल खरीदने की सुविधा प्रदान करता है। इसके परिणामस्वरूप व्यापारी व्यापार बढ़ाने में समर्थ होता है और विक्रेता एवं क्रेता के बीच एक संबंध स्थापित होता है।
- *निश्चित शर्तें* : विनिमय विपत्रों की सहायता से व्यापारी यह जान लेता है कि अमुक तिथि तक व्यापारी को कितनी धनराशि प्राप्त होगी अथवा भुगतान करना होगा। इसका मूल कारण लेनदार और देनदार के मध्य लिखित शर्तों से संबंधित है जैसे कि भुगतान की राशि, भुगतान की तिथि, ब्याज का भुगतान, यदि है तो, भुगतान का स्थान आदि विपत्र पर स्पष्ट रूप से लिखा जाता है।
- *उधार का सुविधाजनक माध्यम:* यह आवश्यक नहीं होता कि माल का क्रय करते समय व्यापारी नकद भुगतान ही करे। वह उधार माल खरीद कर विपत्र स्वीकार कर सकता है।
  हालाँकि अतिरिक्त धन की आवश्यकता अनुभव करने पर विपत्र को बैंक से बट्टागत धनराशि प्राप्त की जा सकती है या तृतीय पक्ष की ओर विपत्र का बेचान किया जा सकता है।
- *निर्णायक प्रमाण* : विनिमय विपत्र एक कानूनी दस्तावेज है। जिसका आशय यह है कि व्यापारिक सौदे के तहत खरीददार बिक्रीदाता से उधार माल खरीदता है, अत: वह विक्रेता को भुगतान करने के लिए बाध्य है। अस्वीकृति की स्थिति में लेनदार नोटरी से निर्णायक प्रमाण लेकर न्यायालय की सहायता से भुगतान वसूल कर सकता है।
- *सरल हस्तांतरण* : ऋणों का भुगतान विनिमय पत्र के बेचान अथवा सुपुर्दगी द्वारा की जा सकती है।

8.4 विपत्र की परिपक्वता

परिपक्वता तिथि से आशय उस तिथि से है जिस दिन विनिमय-विपत्र या प्रतिज्ञा-पत्र भुगतान के लिए देय होता है। भुगतान की तिथि विपत्र की अवधि में तीन दिन, जो *रियायती दिन* कहलाते हैं, जोड़कर निकाली जाती है।

© NCERT not to be republished

अत: यदि एक विपत्र 30 दिन की भुगतान अवधि पर 5 मार्च को लिखा जाता है तो उसकी परिपक्वता तिथि 7 अप्रैल होगी, अर्थात् 5 मार्च से 33 दिन। यदि भुगतान की अवधि एक माह है, तो परिपक्वता तिथि 8 अप्रैल होगी अर्थात् 5 मार्च से एक माह और तीन दिन। यदि परिपक्वता तिथि के दिन सार्वजनिक अवकाश होता है तो साख-पत्र एक दिन पूर्व देय होगा। ऐसी स्थिति में यदि 8 अप्रैल (परिपक्वता तिथि) सार्वजनिक अवकाश है तो 7 अप्रैल परिपक्वता तिथि मानी जाएगी।

यदि भारतीय पराक्रम्य विलेख अधिनियम 1881 के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा आकस्मिक अवकाश घोषित किया जाता है जो साख-पत्र के लिए परिपक्वता तिथि है, तो ऐसी स्थिति में अगला कार्य दिवस परिपक्वता तिथि माना जाएगा।

उदाहरण के लिए गुप्ता द्वारा वर्मा पर 20,000 रु. का विपत्र प्रस्तुत किया गया जिसकी परिपक्वता तिथि 8 अप्रैल थी। किन्तु, यदि पराक्रम्य विलेख अधिनियम के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा 8 अप्रैल आकस्मिक अवकाश घोषित किया जाता है, तो ऐसी स्थिति में 9 अप्रैल परिपक्वता तिथि मानी जायगी।

8.5 विपत्र को बट्टागत (भुनाना) कराना

यदि विपत्र के धारक को धन की आवश्यकता होती है। तब वह देय तिथि से पूर्व उसे बैंक से भुनवा सकता है। इस स्थिति में बैंक विपत्र का भुगतान नाम मात्र कटौती के पश्चात (जिसे बट्टा कहते हैं) विपत्र धारक को करता है। इस विपत्र के नकदीकरण की प्रक्रिया को विपत्र का भुनाना कहते हैं। बैंक आहार्यी से देय तिथि पर विपत्र को भुगतान की प्राप्ति करता है।

8.6 विनिमय-विपत्र का बेचान

विनिमय-विपत्र का बेचान संभव है। विपत्र का धारक भुगतान के लिए अपने किसी भी लेनदार को विपत्र का बेचान कर सकता है। विपत्र के धारक द्वारा बिल का हस्तांतरण संभव है सिवाय इसके कि हस्तांतरण पर प्रतिबंध हो अर्थात् बिल पर हस्तांतरण प्रतिबंध संबंधी शब्दों का प्रयोग किया गया हो।

8.7 लेखांकन व्यवहार

वह व्यक्ति जिसके द्वारा विनिमय-विपत्र लिखा जाता है और स्वीकृति के बाद उसके पास वापिस आ जाता है, तो ऐसी स्थिति में विपत्र उस व्यक्ति विशेष के लिए *प्राप्य विपत्र* बन जाता है। जो व्यक्ति उस विपत्र पर अपनी स्वीकृति देता है उसके लिए वह विपत्र *देय विपत्र* होता है। प्रतिज्ञा-विपत्र की स्थिति में लेखक के लिए *देय नोट* और स्वीकारकर्त्ता के लिए *प्राप्य नोट* होता है। प्राप्य विपत्र परिसंपत्ति होती है और देय विपत्र दायित्व होते हैं। विपत्र और नोट का प्रयोग अदल-बदल कर किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

8.7.1 आहर्ता/बिलकर्त्ता की पुस्तक में प्रविष्टियाँ

एक प्राप्य विपत्र का लेखांकन व्यवहार निम्नलिखित प्रकार से प्राप्तकर्ता द्वारा किया जा सकता है:

- परिपक्वता तिथि तक रखना:
  - (अ) परिपक्वता तिथि तक अपने पास रख कर भुगतान प्राप्त करना।
  - (ब) बैंकर द्वारा भुगतान प्राप्त करना।
- बैंक से विपत्र को भुनाना।
- लेनदार के पक्ष में विपत्र का बेचान करना

उपर्युक्त अवस्थाओं के लिए प्राप्तकर्त्ता की पुस्तक में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाएंगी। यह इस मान्यता पर आधारित है कि विपत्र का भुगतान परिपक्वता तिथि पर होगा।

1.(अ) जब विनिमय विपत्र प्राप्तकर्ता परिपक्वता तिथि तक अपने पास रखता है।

विपत्र प्राप्त होने पर

प्राप्य विपत्र खाता	नाम
देनदार खाते से	

विपत्र की परिपक्वता पर

रोकड़/बैंक खाता	नाम
प्राप्य विपत्र खाते से	

जब प्राप्तकर्त्ता विपत्र अपने पास रखता है और परिपक्वता तिथि से पूर्व विपत्र को बैंक में संग्रह हेतु भेजता है तो ऐसी स्थिति में निम्नलिखित दो प्रविष्टियाँ की जाती हैं:

विपत्र को संग्रह हेतु भेजना

विपत्र को संग्रह हेतु भेजना खाता	नाम
प्राप्य विपत्र खाते से	

बैंक से राशि प्राप्ति की सूचना मिलने पर

बैंक खाता	नाम
विपत्र संग्रह हेतु भेजना खाते से	

2. प्राप्तकर्त्ता द्वारा बैंक से विपत्र भुनाने पर

विपत्र प्राप्त होने पर

प्राप्य विपत्र खाता	नाम
देनदार खाते से	

विपत्र को भुनाने (बट्टागत कराने पर)पर

बैंक खाता	नाम
विपत्र पर छूट खाता	नाम
प्राप्य विपत्र खाते से	

परिपक्वता पर

कोई प्रविष्टि नहीं

© NCERT not to be republished

(क्योंकि विपत्र बैंक की परिसंपत्ति बन जाती है और बैंक द्वारा स्वीकारकर्त्ता से वसूली की जाती है इसलिए पुस्तक में प्रविष्टि नहीं की जाएगी)।

3. प्राप्तकर्त्ता द्वारा अपने लेनदार के पक्ष में विपत्र का बेचान

विपत्र प्राप्त होने पर

प्राप्य विपत्र खाता नाम
देनदार खाते से

विपत्र के बेचान पर

लेनदार खाता नाम
प्राप्य विपत्र खाते से

परिपक्वता पर

कोई प्रविष्टि नहीं

(क्योंकि विपत्र का हस्तांतरण लेनदार के पक्ष में किया गया है, इसलिए लेनदार द्वारा परिपक्वता तिथि को भुगतान प्राप्त होगा। अत: प्राप्तकर्त्ता की पुस्तक में कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी)

8.7.2 स्वीकारकर्त्ता/प्रतिज्ञाकर्त्ता की पुस्तक

उपर्युक्त अवस्थाओं में स्वीकारकर्त्ता की पुस्तक में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाएंगी। इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि विपत्र को अपने पास रखा गया है, भुनाया गया है अथवा बेचान किया गया है।

विपत्र की स्वीकृति पर

लेनदार खाता नाम
देय विपत्र खाते से

विपत्र के परिपक्वता पर

देय विपत्र खाता नाम
बैंक खाते से

बॉक्स - 3

1. जब आहर्ता परिपक्वता तिथि तक विपत्र स्वयं पास रखता है और स्वयं संग्रहित करके राशि प्राप्त करता है।

लेन-देन	*लेनदार/आहर्ता की पुस्तक*	*देनदार/स्वीकारकर्त्ता की पुस्तक*
माल का क्रय/विक्रय	देनदार खाता नाम विक्रय खाते से	क्रय खाता नाम लेनदार खाते से
विपत्र की प्राप्ति/स्वीकृति	प्राप्य विपत्र खाता नाम देनदार खाते से	लेनदार खाता नाम देय विपत्र खाते से
विपत्र की वसूली	रोकड़/बैंक खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से

© NCERT not to be republished

2. जब आहर्ता विपत्र स्वयं के पास रखता है और परिपक्वता तिथि से कुछ दिन पूर्व संग्रह हेतु बैंक भेजता है।

लेन देन	*लेनदार/आहर्ता की पुस्तक*	*देनदार/स्वीकारकर्त्ता की पुस्तक*
माल का क्रय/विक्रय	देनदार खाता नाम विक्रय खाते से	क्रय खाता नाम लेनदार खाते से
विपत्र प्राप्ति/स्वीकार करना	प्राप्य विपत्र खाता नाम देनदार खाते से	लेनदार खाता नाम देय विपत्र खाते से
विपत्र संग्रह हेतु बैंक भेजना	विपत्र संग्रह हेतु भेजना खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से	कोई प्रविष्टि नहीं
बैंक से भुगतान प्राप्ति की सूचना प्राप्त कारना	बैंक खाता नाम विपत्र संग्रह हेतु भेजना खाते से	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से

3. जब आहर्ता/बिलकर्त्ता विपत्र बैंक से भुनाता है।

लेनदेन	*लेनदार/आहर्ता की पुस्तक*	*देनदार/ स्वीकारकर्त्ता की पुस्तक*
माल का क्रय/विक्रय	देनदार खाता नाम विक्रय खाते से	क्रय खाता नाम लेनदार खाते से
विपत्र की प्राप्ति/स्वीकृति	प्राप्य विपत्र खाता नाम देनदार खाते से	लेनदार खाता नाम देय विपत्र खाते से
विपत्र भुनाना	बैंक खाता नाम विपत्र पर बट्टा खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से	कोई प्रविष्टि नहीं
विपत्र का परिपक्वता	कोई प्रविष्टि नहीं	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से

4. लेखक द्वारा लेनदार को विपत्र का बेचान

लेन-देन	*लेनदार/आहर्ता की पुस्तक*	*देनदार/स्वीकारकर्त्ता की पुस्तक*
माल का क्रय/विक्रय	देनदार खाता नाम विक्रय खाते से	क्रय खाता नाम लेनदार खाते से
विपत्र की प्राप्ति/स्वीकार करना	प्राप्य विपत्र खाता नाम देनदार खाते से	लेनदार खाता नाम देय विपत्र खाते से
विपत्र का बेचान	लेनदार खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से	कोई प्रविष्टि नहीं
विपत्र का परिपक्वता	कोई प्रविष्टि नहीं	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से

© NCERT not to be republished

उदाहरण 1

1 जनवरी, 2006 को अमित ने सुमित को 20,000 रु. का उधार माल बेचा और तीन माह की अवधि का एक विपत्र सुमित पर लिखा। सुमित ने विपत्र स्वीकार किया और अमित को वापिस भेज दिया। परिपक्वता तिथि पर सुमित ने विपत्र का भुगतान कर दिया।

निम्नवत अवस्थाओं के संदर्भ में इन व्यवहारों की प्रविष्टियाँ अमित और सुमित की पुस्तकों में कीजिए-

(i) यदि अमित परिपक्वता तिथि तक विपत्र अपने पास रखता है।
(ii) यदि अमित 12% प्रति वर्ष दर से विपत्र को बैंक से भुना लेता है।
(iii) यदि अमित द्वारा अंकित को विपत्र का बेचान किया जाता है।
(iv) यदि 31 मार्च, 2006 को अमित विपत्र अपने बैंकर को संग्रह हेतु भेजता है और 5 अप्रैल को विपत्र भुगतान की सूचना प्राप्त होती है।

हल

अमित की पुस्तक
रोजनामचा

(i) जब अमित परिपक्वता तिथि तक विपत्र अपने पास रखता है।

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.स.*	*नाम* *राशि(रु.)*	*जमा* *राशि(रु.)*
01 जनवरी	सुमित का खाता नाम विक्रय खाते से (सुमित को माल का उधार विक्रय)		20,000	20,000
01 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम सुमित के खाते से (सुमित ने विपत्र स्वीकार किया)		20,000	20,000
05 अप्रैल	बैंक खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान)		20,000	20,000

(ii) जब अमित विपत्र को बैंक से भुनवा लेता है।

रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम* *राशि(रु.)*	*जमा* *राशि(रु.)*
01 जनवरी	सुमित का खाता नाम विक्रय खाते से (सुमित को माल का उधार विक्रय)		20,000	20,000

© NCERT not to be republished

01 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम सुमित के खाते से (सुमित ने विपत्र स्वीकार किया)		20,000	20,000
01 जनवरी	बैंक खाता नाम बट्टा खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (विपत्र को बैंक से भुनाना)		19,400 600	20,000

(iii) जब अमित विपत्र अंकित (लेनदार) के पक्ष बेचान करता है।

रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
01 जनवरी	सुमित का खाता नाम विक्रय खाते से (सुमित को उधार विक्रय)		20,000	20,000
01 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम सुमित के खाते से (सुमित ने विपत्र स्वीकार किया)		20,000	20,000
01 जनवरी	अंकित का खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (अंकित के पक्ष में विपत्र को भुगतान)		20,000	20,000

(iv) अमित द्वारा विपत्र वसूली के लिए बैंक में भेजा गया।

रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
01 जनवरी	सुमित का खाता नाम विक्रय खाते से (सुमित को माल का उधार क्रय)		20,000	20,000
01 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम सुमित के खाते से (सुमित ने विपत्र स्वीकार किया)		20,000	20,000

© NCERT not to be republished

31 मार्च	विपत्र संग्रह के लिए भेजना खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (विपत्र की वसूली के लिए भेजना)		20,000	20,000
5 अप्रैल	बैंक खाता नाम विपत्र संग्रह के लिए भेजना खाते से (विपत्र की वसूली)		20,000	20,000

सभी अवस्थाओं में सुमित की पुस्तक में निम्नवत् प्रविष्टियाँ की जाएगी।

सुमित की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
1 जनवरी	क्रय खाता नाम अमित के खाते से (अमित से उधार क्रय)		20,000	20,000
1 जनवरी	अमित खाता नाम देय विपत्र खाते से (तीन माह की अवधि के लिए स्वीकृत प्राप्त)		20,000	20,000
4 अप्रैल	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से (परिपक्वता पर भुगतान)		20,000	20,000

उदाहरण 2

15 मार्च, 2006 को रमेश ने दीपक को 8,000 रु. का माल उधार बेचा तथा उक्त राशि के लिए तीन माह की अवधि का दीपक पर एक विपत्र लिखा। 15 अप्रैल को रमेश ने अपनी लेनदार पूनम के पक्ष में 8,250 रुपए के पूर्ण भुगतान के रूप में विपत्र का बेचान किया 15 मई को पूनम ने 12% प्रति वर्ष की दर से विपत्र को भुना लिया। परिपक्वता तिथि पर दीपक ने विपत्र का भुगतान कर दिया। रमेश, दीपक और पूनम के रोजनामचों में प्रविष्टियाँ कीजिए।

© NCERT not to be republished

हल

रमेश की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि 2006	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
15 मार्च	दीपक का खाता	नाम		8,000	
	विक्रय खाते से				8,000
	(दीपक को उधार माल बेचा)				
15 मार्च	प्राप्य विपत्र खाता	नाम		8,000	
	दीपक के खाते से				8,000
	(दीपक ने विपत्र पर स्वीकृति दी)				
15 अप्रैल	पूनम का खाता	नाम		8,250	
	प्राप्य विपत्र खाते से				8,000
	बट्टा प्राप्ति खाते से				250
	(विपत्र का पूनम को बेचान तथा 8,250 रु. का पूर्ण भुगतान)				

दीपक की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि 2006	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
5 मार्च	क्रय खाता	नाम		8,000	
	रमेश के खाते से				8,000
	(रमेश से माल का उधार क्रय)				
5 मार्च	रमेश का खाता	नाम		8,000	
	देय विपत्र खाते से				8,000
	(रमेश को विपत्र पर स्वीकृति भेजी गई)				
18 जून	क्रय विपत्र खाता	नाम		8,000	
	बैंक खाते से				8,000
	(परिपक्वता तिथि पर भुगतान किया गया)				

© NCERT not to be republished

पूनम की पुस्तक
रोजनामचा

दिनांक 2006	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम	जमा
15 मार्च	प्राप्य विपत्र खाता	नाम		8,000	
	विपत्र पर बट्टा खाता	नाम		250	
	रमेश के खाते से				8,250
	(रमेश द्वारा पूनम को विपत्र का बेचान)				
5 मार्च	बैंक खाता	नाम		7,920	
	विपत्र पर बट्टा खाता	नाम		80	
	प्राप्य विपत्र खाते से				8,000
	(विपत्र को बैंक से भुनाया गया)				

8.8 विनिमय-विपत्र का अनादरण

जब विपत्र का स्वीकारकर्त्ता परिपक्वता तिथि पर विपत्र भुगतान नहीं करता है तो इसे विपत्र का अनादरण कहते हैं। विपत्र के अनादृत होने पर उसके धारक को विपत्र के सभी पक्षों को अनादरण सूचना देनी होती है अन्यथा सूचना नहीं पाने वाले पक्षकार अपने दायित्व से मुक्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में विपत्र प्राप्ति की विपरीत प्रविष्टि की जाती है।

उदाहरण के लिए, अंजू द्वारा लिखा विपत्र मंजू ने स्वीकार किया। भुगतान तिथि पर विपत्र अनादृत होता है। तो ऐसी स्थिति में मंजू की पुस्तक में निम्नलिखित लेखे किए जाएँगे:

जब अंजू परिपक्वता तिथि तक विपत्र अपने पास रखती है

मंजू का खाता नाम
प्राप्य विपत्र खाता से

जब अंजू संध्या को विपत्र का बेचान करती है

मंजू का खाता नाम
संध्या के खाते से

जब अंजू विपत्र को बैंक में भुनाती है

मंजू का खाता नाम
बैंक खाते से

जब अंजू विपत्र संग्रह हेतु भेजती है

मंजू का खाता नाम
विपत्र संग्रह हेतु भेजना खाते से

© NCERT not to be republished

उदाहरण 3

1 जनवरी, 2006 को विशाल ने शीबा से 10,000 रु. का उधार माल खरीदा। शीबा ने विशाल पर दो माह की अवधि का विपत्र लिखा जिसे विशाल द्वारा स्वीकृत किया गया है। परिपक्वता तिथि पर विशाल द्वारा विपत्र का अनादरण होता है। निम्न परिस्थितियों में शीबा और विशाल की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ कीजिए:

- जब परिपक्वता तिथि तक शीबा विपत्र को अपने पास रखती है।
- जब शीबा अपने बैंक से विपत्र को 200 रु. पर भुनाती है।
- जब शीबा लाल चंद को विपत्र का बेचान करती है।

हल

(i) जब शीबा परिपक्वता तिथि तक विपत्र अपने पास रखती है।

शीबा की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
1 जनवरी	विशाल का खाता नाम विक्रय खाते से (विशाल द्वारा माल का क्रय)		10,000	10,000
1 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम विशाल के खाते से (विशाल विपत्र पर अपनी स्वीकृति देता है)		10,000	10,000
4 मार्च	विशाल का खाता नाम प्राप्य-विपत्र खाते से (विशाल विपत्र का अनादरण करता है)		10,000	10,000

(ii) जब शीबा विपत्र बैंक से भुनाती है।

रोजनामचा

तिथि *2006*	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
1 जनवरी	विशाल का खाता नाम विक्रय खाते से (विशाल द्वारा माल का क्रय)		10,000	10,000

© NCERT not to be republished

1 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम विशाल के खाते से (विशाल द्वारा विपत्र पर स्वीकृति)		10,000	10,000
1 जनवरी	बैंक खाता नाम विपत्र पर बट्टा का खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (विपत्र का बैंक से भुनाना)		9,800 200	10,000
4 मार्च	प्राप्य विपत्र खाता नाम बैंक खाते से (विशाल द्वारा विपत्र का अनादरण)		10,000	10,000

(iii) जब शीबा लालचंद को विपत्र बेचान करती है।

रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
1 जनवरी	विशाल का खाता नाम विक्रय खाते से (विशाल द्वारा माल का क्रय)		10,000	10,000
1 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम विशाल के खाते से (विपत्र पर विशाल की स्वीकृति)		10,000	10,000
1 जनवरी	लाल चंद का खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (लाल चंद को विपत्र का बेचान)		10,000	10,000
4 मार्च	प्राप्य विपत्र खाता नाम लाल चंद खाते से (भुगतान तिथि पर विपत्र का अनादरण)		10,000	10,000

उपरोक्त अवस्थाओं में विशाल की पुस्तक में निम्न प्रविष्टियाँ की जाएँगी

विशाल की पुस्तक
रोजनामचा

दिनांक 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
1 जनवरी	क्रय खाता नाम शीबा के खाते से (शीबा द्वारा माल का विक्रय)		10,000	10,000

© NCERT not to be republished

1 जनवरी	शीबा के खाते से नाम देय विपत्र खाता (शीबा द्वारा लिखे विपत्र पर स्वीकृति प्राप्त)		10,000	10,000
4 मार्च	देय विपत्र खाता नाम शीबा के खाते से (भुगतान तिथि पर विपत्र का अनादरण)		10,000	10,000

8.8.1 निकराई व्यय

जब विपत्र का भुगतान प्राप्त नहीं होता है तब यह प्रमाणित करने के लिए कि विपत्र का भुगतान प्राप्त नहीं हो सका है, आहर्ता/बिलकर्त्ता द्वारा इस संबंध में कार्यवाही की जाती है। विनिमय विपत्र के अनादरण होने का प्रमाण लेना आवश्यक होता है। विपत्र के उचित प्रस्तुतीकरण से आशय है कि बिल को परिपक्वता तिथि पर स्वीकारकर्त्ता के समक्ष व्यावसायिक कार्यकारी घंटों के दौरान प्रस्तुत किया जाना। विपत्र का अनादरण विपत्रालोकी (नोटरी पब्लिक) की उपस्थिति में कराया जाता है। यह अधिकारी विपत्र के पीछे यह प्रमाणित करता है कि मेरी उपस्थिति में विपत्र भुगतान के लिए पेश किया गया था लेकिन स्वीकारकर्ता द्वारा विपत्र का अनादरण किया गया। नोटरी पब्लिक अधिकारी अपने हस्ताक्षर करके विपत्र पर सील लगा देता है। ऐसा करने से अनादरण का तथ्य स्वत: ही सिद्ध हो जाता है। इस अधिकारी को दिया गया शुल्क निकराई व्यय कहलाता है।

निम्नलिखित तथ्य नोटरी पब्लिक द्वारा प्रमाणित किए जाते हैं:

- अनादरण होने का दिनांक, तथ्य एवं कारण;
- यदि विपत्र के अनादरण का खुलासा नही हो पाया है तो अनादरण के कारण व्यक्त करना;
- निकराई व्यय की राशि।

आहर्ता/बिलकर्त्ता की लिखने वाले की पुस्तकों में विभिन्न परिस्थितियों में निकराई व्यय के निम्नलिखित लेखे किए जाते हैं –

- *जब आहर्ता स्वयं निकराई व्यय देता है*
  स्वीकारकर्त्ता खाता नाम
  रोकड़ खाते से
- *जब बेचानकर्त्ता निकराई व्यय देता है*
  स्वीकारकर्त्ता खाता नाम
  बेचानकर्त्ता के खाते से
- *जब बैंक भुनाए गए विपत्र पर निकराई व्यय देता है*
  स्वीकारकर्ता खाता नाम
  बैंक खाते से
- *विपत्र को बैंक में संग्रह हेतु भेजे जाने की स्थिति में, बैंक द्वारा निकराई व्यय का भुगतान*
  स्वीकारकर्ता खाता नाम
  बैंक खाते से

© NCERT not to be republished

उपर्युक्त सभी अवस्थाओं में ध्यान देने योग्य बात यह है कि चाहे किसी भी पक्ष द्वारा निकराई व्यय किए जाएँ, ऐसे व्यय का भार स्वीकारकर्त्ता पर ही रहता है। इसका कारण यह है कि स्वीकारकर्त्ता द्वारा विपत्र का अनादरण हुआ है, अतः उसे ही इन व्ययों का भुगतान करना पड़ेगा। इस संदर्भ में स्वीकारकर्त्ता अपनी पुस्तक में 'निकराई व्यय खाता' खोलता है वह निकराई व्यय खाते को नाम तथा आहर्ता/बिलकर्त्ता खाते को जमा करता है। उदाहरणतया: आजाद ने बंटी को 15,000 रुपए का माल बेचा और तत्काल तीन माह की अवधि के लिए 1 जनवरी, 2006 को एक विपत्र लिखा। परिपक्वता तिथि पर विपत्र अनादृत होने पर धारक द्वारा 50 रुपए निकराई व्यय के भुगतान हेतु आजाद और बंटी की पुस्तकों में निम्नवत् प्रविष्टियाँ की जाएँगी:

- जब आजाद विपत्र स्वयं परिपक्वता तिथि तक रखता है।
- जब आजाद बैंक से 12% प्रतिवर्ष की दर से विपत्र भुनाता है।
- जब आजाद चित्रा को विपत्र का बेचान करता है।

आजाद की पुस्तक में प्रविष्टियाँ इस प्रकार होगी:

आजाद की पुस्तक
रोजनामचा

(i) जब आजाद विपत्र स्वयं के पास परिपक्वता तिथि तक रखता है।

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
01 जनवरी	बंटी का खाता नाम विक्रय खाते से (बंटी से उधार माल खरीदा)		15,000	 15,000
01 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम बंटी खाते से (बंटी से स्वीकृति प्राप्त हुई)		15,000	 15,000
04 अप्रैल	बंटी का खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से रोकड़ खाते से (बंटी द्वारा विपत्र का अनादरण और 50 रु. निकराई व्यय का भुगतान)		15,050	 15,000 50

© NCERT not to be republished

रोजनामचा

(ii) जब अजाद ने विपत्र बैंक से भुनाया।

तिथि 2006	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
01 जनवरी	बंटी का खाता	नाम		15,000	
	विक्रय खाते से				15,000
	(बंटी द्वारा उधार क्रय)				
01 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता	नाम		15,000	
	बंटी के खाते से				15,000
	(विपत्र पर स्वीकृति प्राप्त)				
01 जनवरी	बैंक खाता	नाम		14,550	
	बट्टा खाता	नाम		450	
	प्राप्य विपत्र खाते से				15,000
	(विपत्र को बैंक से बट्टागत कराया गया)				
04 अप्रैल	बंटी का खाता	नाम		15,050	
	बैंक खाते से				15,050
	(भुगतान तिथि पर विपत्र का अनादरण और निकराई व्ययों का बैंक द्वारा भुगतान)				

चित्रा को विपत्र का बेचान

रोजनामचा

तिथि 2006	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
01 जनवरी	बंटी का खाता	नाम		15,000	
	विक्रय खाते से				15,000
	(बंटी द्वारा उधार क्रय)				
01 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता			15,000	
	बंटी का खाते से				15,000
	(बंटी की स्वीकृति प्राप्त)				
01 जनवरी	चित्रा का खाता	नाम		15,000	
	प्राप्य विपत्र खाते से				15,000
	(विपत्र का अनादरण)				
04 अप्रैल	बंटी का खाता	नाम		15,050	
	चित्रा का खाते से				15,050
	(बंटी द्वारा विपत्र का अनादरण और चित्रा द्वारा निकराई व्यय का भुगतान)				

© NCERT not to be republished

तीनों परिस्थितियों में बंटी की पुस्तक में निम्न प्रविष्टियाँ की जाएँगी।

बंटी की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम* *राशि रु.*	*जमा* *राशि रु.*
01 जनवरी	क्रय खाता नाम आजाद के खाते से (आजाद से उधार क्रय)		15,000	 15,000
01 जनवरी	आजाद का खाता नाम देय विपत्र खाते से (विपत्र पर स्वीकृति)		15,000	 15,000
04 अप्रैल	देय विपत्र खाता नाम निकराई व्यय खाता आजाद के खाते से (विपत्र का अनादरण)		15,000 50	 15,050

8.9 विपत्र का नवीनीकरण

कई बार ऐसी स्थिति हो जाती है कि विपत्र स्वीकार करने वाला विपत्र का भुगतान परिपक्वता तिथि पर नहीं कर पाता है। ऐसी दशा में वह विपत्र के अनादरण की अपेक्षा आहर्ता को देय तिथि से पूर्व विपत्र को रद्द करने तथा नया विपत्र आगे की अवधि के लिए लिखने का अनुरोध करता है। इस प्रक्रिया को विनिमय विपत्र नवीनीकरण कहते हैं। वह इस नए विपत्र को स्वीकृति देकर आहर्ता को वापिस दे देता है। नए विपत्र की अवधि, ब्याज की दर आदि शर्तें आहर्ता/बिलकर्त्ता और स्वीकारकर्त्ता आपस में तय कर लेते हैं। ब्याज की राशि या तो नकद दे दी जाती है और यदि इसका प्रबंध न हो सके तो इसे भी विपत्र की रकम में जोड़ दिया जाता है। कई बार स्वीकारकर्त्ता आंशिक राशि का भुगतान करता है और अतिरिक्त राशि के लिए विपत्र का नवीनीकरण कराता है। उदाहरण के लिए, एक विपत्र 10,000 रु. के लिए प्रस्तुत किया गया। यदि स्वीकारकर्त्ता केवल 3,000 रु. का प्रबंध कर सका तो ऐसी स्थिति में 7,000 रु. का नया विपत्र ब्याज की राशि के साथ लिखा जा सकता है। आहर्ता और स्वीकारकर्त्ता की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ विपत्र के अनादरण के समान की जाएगी। यदि ब्याज की राशि नकद में दी जाती है तो इसे आय माना जाता है। यदि ब्याज की राशि नकद नहीं दी जाती तो ऐसी स्थिति में आहर्ता/बिलकर्त्ता स्वीकारकर्त्ता के खाते को नाम और ब्याज खाते में जमा करेगा। स्वीकारकर्त्ता ब्याज को नाम और लेखक के खाते को जमा करेगा।

© NCERT not to be republished

लेखक और स्वीकारकर्त्ता की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टयाँ की जाएँगी

लेन-देन	*आहर्ता की पुस्तक*	*स्वीकारकर्त्ता की पुस्तक*
विपत्र रद्द करना	स्वीकारकर्त्ता खाता नाम प्राप्त विपत्र खाते से	देय विपत्र खाता नाम आहर्ता खाते से
ब्याज की राशि	स्वीकारकर्त्ता खाता नाम ब्याज खाते से	ब्याज खाता नाम आहर्ता खाते से
नया विपत्र लिखना	प्राप्य विपत्र खाता नाम स्वीकारकर्त्ता खाते से	आहर्ता खाता नाम देय विपत्र खाते से

मान लीजिए, 1 फरवरी, 2006 को रवि ने मोहन को 18,000 रु. का उधार माल बेचा। मोहन ने 3,000 रु. का तत्काल नकद भुगतान किया तथा शेष राशि के लिए तीन माह की अवधि का विपत्र स्वीकार किया। परिपक्वता तिथि पर मोहन ने रवि से पुराना विपत्र रद्द करने और उसके स्थान पर दो माह की अवधि का नया विपत्र लिखने का अनुरोध किया। मोहन ने 12% प्रतिवर्ष की दर से नकद ब्याज देने का निर्णय लिया। मोहन के अनुरोध पर रवि ने पुराना विपत्र रद्द कर नया विपत्र लिखा। परिपक्वता तिथि पर मोहन ने विपत्र का भुगतान कर दिया। इस संदर्भ में रवि और मोहन की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ इस प्रकार की जाएँगी:

रवि की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि 2006	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
1 फरवरी	मोहन का खाता नाम विक्रय खाते से (मोहन को उधार माल बेचा)		18,000	 18,000
1 फरवरी	रोकड़ खाता नाम प्राप्य विपत्र खाता नाम मोहन के खाते से (मोहन ने 3,000 रु. का नकद भुगतान किया और शेष राशि के लिए विपत्र स्वीकार किया।)		3,000 15,000	 18,000
1 मई	मोहन का खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से ब्याज प्राप्ति खाते से (पुराना विपत्र रद्द किया गया और 300 रु. ब्याज राशि का भुगतान किया)		15,300	 15,000 300

© NCERT not to be republished

4 मई	प्राप्य विपत्र खाता नाम रोकड़ खाता मोहन के खाते से (मोहन ने नये विपत्र पर स्वीकृति दी)		15,000 300	 15,300
7 जुलाई	बैंक खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (मोहन ने विपत्र का भुगतान किया)		15,000	 15,000

मोहन की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि 2006	विवरण	ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
1 फरवरी	क्रय खाता नाम रवि का खाते से (रवि से उधार माल खरीदा)		18,000	 18,000
1 फरवरी	रवि का खाता नाम रोकड़ खाते से प्राप्य विपत्र खाते से (रवि को 3,000 रु. का नकद भुगतान किया और शेष राशि का विपत्र स्वीकार किया)		18,000	 3,000 15,000
4 मई	देय विपत्र खाता नाम ब्याज खाता नाम रवि के खाते से (पुराना विपत्र रद्द किया और 300 रु. ब्याज राशि का भुगतान किया)		15,000 300	 15,300
4 मई	रवि का खाता नाम देय विपत्र खाते से रोकड़ खाते से (नया विपत्र स्वीकार किया)		15,000	 15,000 300
7 जुलाई	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से (परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान)		15,000	 15,000

8.10 विनिमय विपत्र का परिपक्वता तिथि से पूर्व भुगतान

कभी–कभी आहर्ता और स्वीकारकर्त्ता की आपसी सहमति से विपत्र का भुगतान परिपक्वता तिथि से पूर्व कर दिया जाता है। ऐसा तब होता है जब स्वीकारकर्त्ता के पास पर्याप्त धनराशि होती है और वह

© NCERT not to be republished

विपत्र की राशि का परिपक्वता तिथि से पहले भुगतान करने का निश्चय करता है। वह इसकी जानकारी विपत्र के लेखक को देता है और यदि उसे लेखक की स्वीकृति प्राप्त हो जाती है तो वह किसी भी दिन विपत्र का भुगतान कर देता है। चूँकि स्वीकारकर्त्ता राशि का देय तिथि से पूर्व भुगतान करता है इस कारण वह जितने दिन पूर्व भुगतान करता है उतने दिन का ब्याज विनिमय विपत्र की राशि में से घटा कर, शेष राशि आहर्ता को देता है। परिपक्वता तिथि से पूर्व विपत्र के भुगतान को प्रोत्साहित करने हेतु आहर्ता/बिलकर्त्ता विपत्र पर एक निश्चित बट्टा प्रदान करता है जिसे *विपत्र पर* छूट कहते हैं। छूट की राशि का निर्धारण एक निश्चित ब्याज दर पर किया जाता है।

समान्य परिस्थितियों में, परिपक्वता तिथि से पूर्व विपत्र के भुगतान का लेखांकन व्यवहार देय तिथि पर विपत्र के भुगतान के समान ही होता है। दोनो मदों के मध्य केवल छूट प्राप्ति लेखांकन व्यवहार का ही अंतर होता है।

उपरोक्त स्थिति में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं:

धारक की पुस्तक में

विपत्र का अवधि से पहले भुगतान और छूट प्राप्त होने पर

रोकड़ खाता नाम

विपत्र पर छूट खाता नाम

प्राप्य विपत्र खाते से

स्वीकारकर्त्ता की पुस्तक में

देय विपत्र खाता नाम

रोकड़ खाता नाम

विपत्र पर छूट खाते से

उदाहरण के लिए अमित ने बबली को 1 जनवरी, 2006 को 10,000 रु. का उधार माल बेचा और उक्त राशि का एक विपत्र लिखा जिसे बबली ने स्वीकृत करके अमित को वापिस कर दिया। 4 मार्च, 2006 को 6% वार्षिक छूट पर विपत्र का भुगतान कर दिया। इस संदर्भ में निम्नांकित प्रविष्टियाँ की जाएगी:

अमित की पुस्तक

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
2006 1 जनवरी	बबली का खाता नाम विक्रय खाते से (बंटी को उधार माल बेचा।)		10,000	 10,000
1 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम बंटी के खाते से (तीन माह की अवधि के लिए स्वीकृत प्राप्त)		10,000	 10,000

© NCERT not to be republished

4 मार्च	रोकड़ खाता नाम विपत्र पर छूट खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (विपत्र भुगतान प्राप्त हुआ)			9,950 50	 10,000

अभिलिखित प्रविष्टियों की खतौनी इस प्रकार होगी:

बबली का खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	राशि रु.
2006 1 जनवरी	विक्रय		10,000	2006 1 जनवरी	प्राप्य विपत्र		10,000

प्राप्त किया खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	राशि रु.
2006 1 जनवरी	बबली		10,000	2006 1 जनवरी	रोकड़ विपत्र पर छूट		9,950 50
							10,000

बबली की पुस्तक

रोजनामचा

तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
2006 01 जनवरी	क्रय खाता नाम अमित के खाते से (अमित से माल खरीदा)		10,000	 10,000
01 जनवरी	अमित का खाता नाम देय विपत्र खाते से (विपत्र पर स्वीकृति प्राप्त)		10,000	 10,000
04 मार्च	देय विपत्र खाता नाम रोकड़ खाता विपत्र पर छूट खाते से (देय तिथि से पूर्व भुगतान और छूट प्राप्त)		10,000	 9,950 50

अमित का खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006 01 जनवरी	देय विपत्र		10,000	2006 04 जनवरी	क्रय		10,000
			10,000				10,000

© NCERT not to be republished

देय विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
2006				2006			
01 जनवरी	रोकड़		10,000	01 जनवरी	अमित		10,000
	विपत्र पर छूट		50				
			10,000				10,000

8.11 प्राप्य विपत्र बही और देय विपत्र पुस्तकें

जब व्यापार में अधिक मात्रा में विपत्रों का लेन-देन होने लगता है तब विपत्रों से संबंधित लेन-देनों के प्रत्येक सौदे को रोजनामचा प्रविष्टि के माध्यम से अभिलेखित किया जाना एक किस्म से बाधाप्रद हो जाता है। तब यह आवश्यक समझा जाता है कि विशेष सहायक बही बनाई जाए जिसमें सभी प्राप्य विपत्रों और देय विपत्रों का लेखा हो। विपत्र संबंधी लेन-देनों को सहायक पुस्तकों में अभिलिखित करने का कारण रोकड़ क्रय आदि को सहायक पुस्तकों में प्रविष्टि करने के समान होता है। सहायक बही के संबंध में एक आवश्यक बिंदु यह है कि इनमें बेचान, अनादरण, भुनाना, रद्द करना, समय पूर्व भुगतान के संदर्भ में प्रविष्टियाँ नहीं की जाती हैं, बल्कि सिर्फ विपत्र को लिखने व स्वीकृत करने की प्रविष्टियाँ अभिलिखित होती हैं। ध्यानयोग्य है कि विपत्र के भुगतान की प्रविष्टि रोकड़ बही में की जाती है।

8.11.1 प्राप्य विपत्र पुस्तक

इस पुस्तक में व्यापारी द्वारा प्राप्त विपत्र और उनके भुगतान से संबंधित सूचनाएँ रहती हैं। विपत्र की तिथि स्वीकारकर्त्ता का नाम, राशि, अवधि, भुगतान का स्थान आदि सूचनाएँ इसमें सम्मिलित होती हैं। अन्य सहायक पुस्तकों के समान प्राप्य विपत्र पुस्तक को निश्चित समयावधि पर जोड़ा जाता है। इस जोड़ को प्राप्य विपत्र खाते में नाम किया जाता है, जबकि प्रत्येक देनदार के खाते को खाता-बही में जमा किया जाता है। प्राप्य विपत्र खाता एक परिसंपत्ति खाता है तथा सदैव इसका नाम शेष रहता है। किसी भी दिनांक पर प्राप्य विपत्र का शेष अपरिपक्व प्राप्य विपत्र माना जाता है। प्राप्य विपत्र पुस्तक का प्रारूप चित्र 8.3 मे दर्शाया गया है।

प्राप्य विपत्र बही

सं.	प्राप्ति तिथि	विपत्र की तिथि	किससे प्राप्त किया	लेखक	स्वीकारकर्त्ता	देय स्थान	अवधि	देय तिथि	ब.पृ.स.	राशि रु.	रो.ब.सं.	टिप्पणी

चित्र 8.3: *प्राप्त विपत्र बही का प्रारुप*

© NCERT not to be republished

8.11.2 देय विपत्र बही

इस पुस्तक को प्राप्य विपत्र बही के समान बनाया जाता है। व्यापारी जो माल दूसरे व्यापारियों से क्रय करता है और उसके बदले में विपत्र स्वीकार करता है, उन विपत्रों का लेखा देय विपत्र बही में किया जाता है। देय विपत्र का प्रारूप चित्र 8.4 में दर्शाया गया है।

देय विपत्र बही

सं.	विपत्र की तिथि	किसे दिया गया	लेखक	पाने वाला	कहाँ पर देय	अवधि	देय तिथि	ब.पृ.स.	राशि रु.	दिनांक	रो.पृ.सं.	टिप्पणी

चित्र 8.4: *देय विपत्र बही का प्रारूप*

इस पुस्तक से प्रविष्टियाँ प्रत्येक लेनदार के खाते में नाम पक्ष में की जाती है। इस पुस्तक का समय-समय पर किया गया कुल जोड़ देय विपत्र खाते के जमा पक्ष में लिखा जाता है। चूँकि देय विपत्र खाता दायित्व दर्शाता है, इसलिए इसका शेष जमा पक्ष मे लिखा जाता है। इस खाते के जमा पक्ष का जोड़ किसी भी दिनांक पर देय विपत्र प्रस्तुत होने के जोड़, जो देय विपत्र बही से पता चलता है, के समान होना चाहिए। उदाहरण के लिए निम्नलिखित लेन-देनों की प्राप्य विपत्र और देय विपत्र पुस्तक में प्रविष्टियाँ संबंधित खाता-बही में खतौनी सहित इस प्रकार की जाएंगी:

2006

7 जनवरी

तीन माह की अवधि के लिए श्री एस. मित्रा से 1,32,500 रुपए का विपत्र दिनांक 4 जनवरी को स्वीकार किया।

9 जनवरी

दो माह की अवधि के लिए श्री. एस. वर्धन से 9,70,000 रु. का विपत्र स्वीकार किया।

13 जनवरी

प्रधान ने तीन माह की अवधि के लिए 39,000 रुपए का विपत्र लिखा; जिस पर स्वीकृति प्राप्त हुई।

14 जनवरी

आर. राकेश पर एक माह की अवधि के लिए 25,500 रु. का विपत्र लिखा जिसे उसने दूसरे दिन स्वीकार कर लिया।

18 जनवरी

एस. पारकर को 42,000 रुपए के लिए दो माह की स्वीकृति दी।

21 जनवरी

जी. घोष को दो माह की अवधि के लिए 31,000 रुपए के लिए स्वीकृति दी।

22 जनवरी

डी. धीमान से ए. वकील को विपत्र पर स्वीकृति तीन माह की अवधि के लिए 20,000 रुपए के लिए प्राप्त की।

© NCERT not to be republished

23 जनवरी

के. कंगा ने 30,000 रुपए का माह की अवधि के लिए विपत्र पर स्वीकृति दी।

27 जनवरी

एम. मेयर द्वारा दो माह की अवधि के लिए लिखा, पी. पारकर द्वारा स्वीकृति 35,000 रुपए का विपत्र सी. शाह से प्राप्त किया।

31 जनवरी

ए. रोबर्ट को एक माह की अवधि के लिए 21,500 रुपए के विपत्र पर स्वीकृति दी।

एस. मित्रा का खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006 1 जनवरी	विक्रय		1,32,500	2006 7 जनवरी	प्राप्य विपत्र		1,32,500
			1,32,500				1,32,500

आर. राकेश का खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006 14 जनवरी	विक्रय		25,000	2006 15 जनवरी	प्राप्य विपत्र		25,000
			25,000				25,000

जी. घोष का खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006 21 जनवरी	विक्रय		31,000	2006 21 जनवरी	प्राप्य विपत्र		31,000
			31,000				31,000

डी. धीमान का खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006 22 जनवरी	विक्रय		20,000	2006 22 जनवरी	प्राप्य विपत्र		20,000
			20,000				20,000

© NCERT not to be republished

प्राप्य विपत्र बही

सं.	प्राप्ति तिथि 2006	विपत्र की तिथि	किससे प्राप्त किया	विपत्र का लेखक	स्वीकारकर्ता	देय स्थान	अवधि	देय तिथि 2006	ब.पृ.सं	राशि रु.	रो.पृ.सं	टिप्पणी
01	07 जनवरी		एस. मित्रा	स्वयं	एस. मित्रा	मुंबई	3 माह	17 अप्रैल		1,32,500		
02	07 जनवरी		आर. राकेश	स्वयं	एस. मित्रा	अमृतसर	1 माह	17 फरवरी		25,500		
03	21 जनवरी		जी. घोष	स्वयं	जी. घोष	कोलकाता	2 माह	24 मार्च		31,000		
04	22 जनवरी		डी. धीमान	डी. धीमान	ए. वकील	मुंबई	3 माह	20 अप्रैल		20,000		
05	23 जनवरी		डी. कंगा	स्वयं	डी. कंगा	बंगलोर	1 माह	26 फरवरी		30,000		
06	27 जनवरी		सी. साह	एम. मेयर्स	पी. पार्सन	चेन्नई	2 माह	23 मार्च		35,000		
								योग		**2,73,500**		

देय विपत्र बही

सं.	विपत्र	किसे दिया गया	लेखक	पानेवाला	कहाँ पर देय	अवधि	देय तिथि	ब.पृ.सं	राशि रु.	भुगतान की तिथि	रो.पृ.सं	टिप्पणी
	2006						2006					
01	09 जनवरी	एस. वर्धन	एस. वर्धन	-		2 माह	31 मार्च		97,000			
02	13 जनवरी	प्रधान	प्रधान	-		3 माह	16 अप्रैल		39,000			
03	18 जनवरी	एस. पारकर	एस. पारकर	-		2 माह	21 मार्च		42,000			
04	31 जनवरी	ए. रोबर्ट	ए. रोबर्ट	-		1 माह	03 मार्च		21,000			
							योग		**1,99,500**			

के. कंगा का खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006							
23 जनवरी	विक्रय		30,000	23 जनवरी	प्राप्य विपत्र		30,000
			30,000				30,000

सी. शाह का खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006				2006			
27 जनवरी	विक्रय		35,000	27 जनवरी	प्राप्य विपत्र		35,000
			35,000				35,000

प्राप्य विपत्र खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006				2006			
31 जनवरी	माल		2,73,500	31 जनवरी	योग आ/ले		2,73,500
			2,73,500				2,73,500

एस. वर्धन का खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006				2006			
9 जनवरी	देय विपत्र		97,000	9 जनवरी	प्राप्य विपत्र		97,000
			97,000				97,000

प्रधान खाता

नाम जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2006				2006			
13 जनवरी	देय विपत्र		39,000	31 जनवरी	प्राप्य विपत्र		39,000
			39,000				39,000

© NCERT not to be republished

एस. पारकर का खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
2006				2006			
18 जनवरी	देय विपत्र		42,000	18 जनवरी	क्रय		42,000
			42,000	18 जनवरी			42,000

ए. रोबर्ट का खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
2006				2006			
31 जनवरी	देय विपत्र		21,500	31 जनवरी	क्रय		21,500
			21,500				21,500

देय विपत्र खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ.सं.*	*राशि रु.*
2006				2006			
31 जनवरी	शेष आ/ले		1,99,500	31 जनवरी	माल		1,99,500
			1,99,500				1,99,500

टिप्पणी: विपत्र के आहरण एवं स्वीकृति से यह मान लिया जाता है कि क्रय-विक्रय किया गया है। अत: विपत्र लेन-देनों को इन पुस्तकों से लेनदार/देनदार खातों में हस्तांतरण के लिए क्रय-विक्रय का होना आवश्यक है।

उदाहरण 4

15 जनवरी, 2006 को सचिन ने नारायण को 30,000 रुपए का उधार माल बेचा और तीन माह की अवधि के लिए एक विनिमय-विपत्र लिखा जिसे नारायण ने स्वीकार कर लिया। 31 जनवरी, 2006 को सचिन ने विनिमय-विपत्र बैंक से 29,250 रु. में भुना लिया।

परिपक्वता तिथि पर नारायण ने सचिन से विपत्र रद्द करने और नया विनिमय-विपत्र लिखने का अनुरोध किया। नारायण ने सचिन को 10,500 रु. जिसमें ब्याज की राशि 500 रु. सम्मिलित थी, का नकद भुगतान किया और शेष 20,000 रु. की राशि के लिए नया विनिमय-विपत्र स्वीकार किया। सचिन ने नया विनिमय-विपत्र 20,800 रु. ऋण के पूर्ण भुगतान के लिए अपने लेनदार कपिल को बेचान किया। नारायण ने देय तिथि पर नए विनिमय-विपत्र का भुगतान किया। सचिन और नारायण की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ कीजिए।

© NCERT not to be republished

हल

सचिन की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
2006					
15 जनवरी	नारायण का खाता	नाम		30,000	
	विक्रय खाते से				30,000
	(नारायण को उधार माल बेचा)				
15 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता	नाम		30,000	
	नारायण के खाते से				30,000
	(नारायण ने विपत्र स्वीकार किया)				
31 जनवरी	बैंक खाता	नाम		29,250	
	विपत्र पर बट्टा			750	
	प्राप्य विपत्र खाते से				30,000
	(स्वीकृत विपत्र को बैंक से भुनाया)				
19 अप्रैल	नारायण का खाता	नाम		30,500	
	बैंक खाता				30,000
	ब्याज खाते से				500
	(विपत्र रद्द को बैंक से भुनाया)				
19 अप्रैल	बैंक खाता	नाम		10,500	
	प्राप्य विपत्र खाता	नाम		20,000	
	नारायण के खाते से				30,500
	(नारायण द्वारा नकद भुगतान और नए विपत्र पर स्वीकृति)				
19 अप्रैल	कपिल का खाता	नाम		20,800	
	प्राप्य विपत्र खाते से				20,000
	बट्टा प्राप्ति खाते से				800
	(कपिल को विपत्र का बेचान और बट्टा प्राप्त)				

© NCERT not to be republished

नारायण की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
2006					
15 जनवरी	क्रय खाता	नाम		30,000	
	सचिन का खाते से				30,000
	(सचिन ने उधार माल बेचा)				
15 जनवरी	सचिन का खाता	नाम		30,000	
	देय विपत्र खाते से				30,000
	(विपत्र पर स्वीकृति)				
19 अप्रैल	देय विपत्र खाता	नाम		30,000	
	ब्याज खाता	नाम		500	
	सचिन के खाते से				30,500
	(पुराना विपत्र रद्द और उस पर ब्याज का भुगतान)				
19 अप्रैल	सचिन का खाता	नाम		30,500	
	बैंक खाते से				10,500
	देय विपत्र खाते से				20,000
	(सचिन को नकद भुगतान और शेष राशि पर विपत्र स्वीकृत)				
22 जुलाई	देय विपत्र खाता	नाम		20,000	
	बैंक खाते से				20,000
	(परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान)				

उदाहरण 5

30 अक्टूबर, 2005 को अशोक ने बिशन को 14,000 रुपए का माल बेचा और तीन विपत्र लिखे: पहला विपत्र 2,000 रुपए का दो माह की अवधि के लिए, दूसरा विपत्र 4,000 रुपए का तीन माह की अवधि के लिए, और तीसरा विपत्र 8,000 रुपए का चार माह की अवधि के लिए। पहला विपत्र अशोक ने परिपक्वता तिथि तक अपने पास रखा। दूसरा विपत्र का अशोक ने अपने लेनदार चेतन को बेचान किया। तीसरा विपत्र 3 दिसंबर, 2005 को 12% प्रति वर्ष की दर से भुना लिया गया। पहले और दूसरे विपत्र का परिपक्वता तिथि पर भुगतान कर दिया गया परंतु तीसरा विपत्र अनादृत हुआ और बैंक ने 50 रुपए निकराई व्यय का भुगतान किया। 3 मार्च, 2006 को बिशन ने 4,000 रुपए और निकराई व्यय का नकद भुगतान किया और शेष राशि के लिए नया विपत्र 100 रुपए ब्याज सहित स्वीकार किया। परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान किया गया। अशोक और बिशन के रोजनामचे में प्रविष्टियाँ कीजिए तथा अशोक की पुस्तक में बिशन का खाता और बिशन की पुस्तक में अशोक का खाता बनाइए।

© NCERT not to be republished

हल

अशोक की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	विवरण		ब.प.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
2005 30 अक्टूबर	बिशन का खाता विक्रय खाते से (बिशन द्वारा उधार माल विक्रय)	नाम		14,000	 14,000
30 अक्टूबर	प्राप्य विपत्र खाता बिशन के खाते से (बिशन से तीन विपत्रों पर स्वीकृति प्राप्त की)	नाम		14,000	 14,000
30 अक्टूबर	चेतन का खाता प्राप्य विपत्र खाते से (लेनदार चेतन को विपत्र का बेचान)	नाम		4,000	 4,000
3 दिसंबर	बैंक खाता बट्टा प्राप्ति खाता प्राप्य विपत्र खाते से (तीसरा विपत्र बैंक से भुनाया)			7,760 240	 8,000
2006 2 जनवरी	बैंक खाता प्राप्य विपत्र खाते से (परिपक्वता तिथि पर पहले विपत्र का भुगतान)	नाम		2,000	 2,000
3 मार्च	बिशन का खाता बैंक खाते से (तीसरे विपत्र का अनादरण हुआ)	नाम		8,050	 8,050
3 मार्च	रोकड़ खाता बिशन के खाते से (बिशन से नकद प्राप्ति हुई)	नाम		4,050	 4,050
3 मार्च	बिशन का खाता ब्याज खाता (बढ़ाई गई अवधि पर ब्याज का भुगतान)	नाम		100	 100
3 मार्च	प्राप्य विपत्र खाता बिशन के खाते से (दो माह की अवधि के लिए नई स्वीकृति दी)	नाम		4,100	 4,100
12 मई	बैंक खाता प्राप्य विपत्र खाते से (परिपक्वता तिथि विपत्र का भुगतान)	नाम		4,100	 4,100

© NCERT not to be republished

बिशन का खाता

नाम **जमा**

तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.	तिथि	विवरण	रो.पृ.सं.	राशि रु.
2005				2005			
30 अक्टूबर	विक्रय		14,000	30 अक्टूबर	प्राप्य विपत्र		14,000
2006				2006			
3 मार्च	बैंक		8,050	3 मार्च	रोकड़		4,050
3 मार्च	ब्याज		100	3 मार्च	प्राप्य विपत्र		4,100
			22,150				22,150

बिशन की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	विवरण		ब.प.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
2005					
30 अक्टूबर	क्रय खाता	नाम		14,000	
	अशोक के खाते से				14,000
	(अशोक से उधार क्रय)				
30 अक्टूबर	अशोक का खाता	नाम		14,000	
	देय विपत्र खाते से				14,000
	(तीन विपत्रों पर स्वीकृति दी)				
2006					
2 जनवरी	देय विपत्र खाता	नाम		2,000	
	बैंक खाते से				2,000
	(परिपक्वता तिथि पर पहले विपत्र का भुगतान)				
2 जनवरी	देय विपत्र खाता	नाम		8,000	
	निकराई व्यय खाता	नाम		50	
	अशोक के खाते से				8,050
	(तीसरे विपत्र का अनादरण और 50 रु. निकराई व्यय का भुगतान)				
3 मार्च	अशोक खाता	नाम		4,050	
	रोकड़ खाते से				4,050
	(अशोक को 4,000 और निकराई व्यय का भुगतान)				
3 मार्च	ब्याज खाता	नाम		100	
	अशोक खाता				100
	(बढ़ाई गई समय सीमा पर ब्याज)				

© NCERT not to be republished

3 मार्च	अशोक का खाता नाम देय विपत्र खाते से (दो माह की अवधि के लिए नया विपत्र स्वीकार)		4,100	4,100
6 मार्च	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से (परिपक्वता तिथि पर नए विपत्र का भुगतान)		4,100	4,100

अशोक का खाता

नाम **जमा**

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*राशि रु.*	*तिथि*	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*राशि रु.*
2005				2005			
30 अक्टूबर	देय विपत्र		14,000	30 अक्टूबर	क्रय		14,000
2006				2006			
9 मार्च	रोकड़		4,050	3 मार्च	देय विपत्र		8,000
9 मार्च	देय विपत्र		4,100		निकराई व्यय		50
				9 मार्च	ब्याज		100
			22,150				22,150

उदाहरण 6

आशीर्वाद ने आकर्षक पर 10,000 रु. का तीन माह की अवधि के लिए एक विपत्र लिखा, जिसे 1 जनवरी, 2006 को आकर्षक ने स्वीकार किया। आशीर्वाद ने आकृति को इस विपत्र का बेचान किया। परिपक्वता तिथि से पूर्व आकर्षक ने आशीर्वाद से 18% प्रति वर्ष की दर से तीन माह की अवधि के लिए विपत्र के नवीनीकरण का अनुरोध किया। आशीर्वाद ने आकृति को देय तिथि पर भुगतान किया साथ ही आकर्षक के अनुरोध को स्वीकार कर नया विपत्र लिखा। परिपक्वता तिथि पर आकर्षक ने विपत्र का भुगतान कर दिया। आशीर्वाद की पुस्तक से प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

आशीर्वाद की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
2006 1 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता नाम आकर्षक के खाते से (आकर्षक द्वारा स्वीकृति प्राप्त)		10,000	10,000

© NCERT not to be republished

1 जनवरी	आकृति का खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (आकृति को विपत्र का बेचान)		10,000	10,000
4 अप्रैल	आकर्षक का खाता नाम आकृति के खाते से (विपत्र रद्द किया गया)		10,000	10,000
4 अप्रैल	आकृति का खाता नाम बैंक के खाते से (आकृति को भुगतान)		10,000	10,000
4 अप्रैल	आकर्षक का खाता नाम ब्याज खाते से (18% प्रतिवर्ष की दर से तीन माह की अवधि पर ब्याज)		450	450
4 अप्रैल	प्राप्य विपत्र खाता नाम आकर्षक के खाते से (नए विपत्र पर आकर्षक ने स्वीकृति दी)		10,450	10,450
7 जुलाई	बैंक खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (परिपक्वता तिथि पर नए विपत्र का भुगतान)		10,450	10,450

उदाहरण 7

1 अप्रैल, 2006 को अंकित ने निकिता को 6,000 रुपए का तीन माह की अवधि के लिए एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखा जिसे निकिता ने 5,760 रुपए में बैंक से भुना लिया। परिपक्वता तिथि पर विपत्र अनादृत हुआ, जिस पर बैंक ने 15 रुपए निकराई व्यय का भुगतान किया। अंकित ने 2,000 रुपए का नकद भुगतान किया और शेष राशि के लिए नया विपत्र स्वीकार किया, जिसमें ब्याज के 100 रु. सम्मिलित थे। नया विपत्र दो माह की अवधि के लिए लिखा गया। परिपक्वता तिथि पर पुनः विपत्र अनादृत हुआ और निकिता ने 15 रुपए निकराई व्यय का भुगतान किया। निकिता के रोजनामचे में प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल

निकिता की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
2005 1 अप्रैल	प्राप्य विपत्र खाता नाम अंकित के खाते से (अंकित से प्रतिज्ञा-पत्र प्राप्त किया)		6,000	6,000

© NCERT not to be republished

1 अप्रैल	बैंक खाता नाम बट्टा प्राप्ति खाता नाम देय विपत्र खाते से (अंकित के प्रतिज्ञा-पत्र को 5,760 रु. में बैंक से भुनाया)		5,760 240	 6,000
4 जुलाई	अंकित का खाता नाम बैंक खाते से (परिपक्वता तिथि पर विपत्र का अनादरण और बैंक द्वारा निकराई व्यय का भुगतान)		6,015	 6,015
4 जुलाई	रोकड़ खाता नाम अंकित के खाते से (अंकित से नकद प्राप्ति)		2,000	 2,000
4 जुलाई	अंकित का खाता नाम ब्याज खाते से (नए विपत्र पर ब्याज)		100	 100
4 जुलाई	प्राप्य विपत्र खाता नाम अंकित के खाते से (बढ़ाई गई दो माह की अवधि पर अंकित की स्वीकृति)		4,115	 4,115

उदाहरण 8

1 मई, 2006 को मोहित ने 6,000 रुपये का तीन माह की अवधि के लिए रोहित को एक प्रतिज्ञा-पत्र भेजा। रोहित ने 4 मई, 2006 को बैंक से 18% प्रति वर्ष की दर से विपत्र भुना लिया। परिपक्वता तिथि पर मोहित द्वारा विपत्र अनादृत हुआ और बैंक ने 10 रुपये निरकाई व्यय किए। रोहित ने मोहित से 2,170 रुपए नकद स्वीकार किए जिसमें 130 रुपए निकराई व्यय और ब्याज सम्मिलित हैं तथा 4,000 रुपए का दो माह की अवधि के लिए नया प्रतिज्ञा-पत्र स्वीकार किया। परिपक्वता तिथि पर रोहित ने इस शर्त पर मोहित का अनुरोध स्वीकार किया कि वह 200 रुपए ब्याज की नकद राशि का भुगतान करे। परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान किया गया। रोहित और मोहित के रोजनामचे में प्रविष्टियाँ कीजिए।

मोहित की पुस्तक
रोजनामचा

दिनांक	*विवरण*	*ब.पृ.स.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
2006 1 मई	रोहित का खाता नाम देय विपत्र खाते से (रोहित को प्रतिज्ञा-पत्र भेजा)		6,000	 6,000

© NCERT not to be republished

4 अगस्त	देय विपत्र खाता नाम		6,000	
	निकराई खाता नाम		10	
	रोहित के खाते से			6,010
	(विपत्र का अनादरण और निकराई व्यय)			
4 अगस्त	ब्याज खाता नाम		120	
	रोहित के खाते से			120
	(ब्याज की राशि का भुगतान)			
4 अगस्त	रोहित का खाता नाम		6,130	
	देय विपत्र खाता			4,000
	रोकड़ खाते से			2,130
	(2,130 रुपए का नकद भुगतान और नया शेष राशि के लिए विपत्र लिखा)			
7 अक्तूबर	देय विपत्र खाता नाम		4,000	
	रोहित के खाते से			4,000
	(विपत्र रद्द किया गया)			
7 अक्तूबर	ब्याज खाता नाम		200	
	रोहित के खाते से			200
	(नये विपत्र पर ब्याज की राशि)			
7 अक्टूबर	रोहित खाता नाम		4,200	
	रोकड़ खाते से			200
	देय विपत्र खाते से			4,000
	(ब्याज का भुगतान और नया विपत्र रोहित को भेजा)			
1 जनवरी	देय विपत्र खाता नाम		4,000	
	रोकड़ खाते से			4,000
	(परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान)			

रोहित की पुस्तकें
रोजनमचा

दिनांक	*विवरण*	*ब.पृ.स.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
2006				
01 मई	प्राप्य विपत्र खाता नाम		6,000	
	मोहित के खाते से			6,000
	(मोहित से प्रतिज्ञा पत्र प्राप्त)			
04 मई	बैंक खाता नाम		5,730	
	बट्टा खाता नाम		270	
	प्राप्य विपत्र खाते से			6,000
	(प्रतिज्ञा पत्र को 18% प्रति वर्ष की दर पर बैंक से भुनाया)			

© NCERT not to be republished

04 अगस्त	मोहित का खाता नाम बैंक खाते से (प्रतिज्ञा-पत्र का अनादरण और बैंक ने 10 रु. निकराई व्यय दिये)		6,000	6,010
04 अगस्त	मोहित का खाता नाम ब्याज खाते से (ब्याज के रूप में स्वीकृत राशि का भुगतान)		120	120

स्वयं जाँचिए - 3

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

(i) विनिमय विपत्र एक -------------- पत्रक है।

(ii) विनिमय विपत्र --------- द्वारा --------- पर लिखा जाता है।

(iii) प्रतिज्ञा पत्र -------- द्वारा --------- पर लिखा जाता है।

(iv) विनिमय विपत्र के ---------- पक्षकार होते हैं।

(v) प्रतिज्ञा पत्र के --------- पक्षकार होते हैं।

(vi) विपत्र के संदर्भ में बिलकर्त्ता और --------- एक पक्षकार नहीं हो सकते हैं।

(vii) भारतीय भाषा में विनिमय विपत्र --------- कहलाती है।

(viii) -------- तिथि के अंकन के लिए ----- रियायती दिन विपत्र की शर्तो में जोड़े जाते हैं।

8.12 निभाव (सहायतार्थ) विपत्र

सामान्यतया विनिमय विपत्र अथवा प्रतिज्ञा-पत्र वास्तविक माल के लेन-देनों को वित्त करने हेतु लिखा जाता है अर्थात् विनिमय विपत्र के संदर्भ में बिलकर्त्ता पर उत्पन्न व्यापार ऋण के निपटान हेतु आहार्यी द्वारा दी गयी स्वीकृति है तथा यह विलेख *व्यापार विपत्र* कहलाता है। चूँकि इसकी उत्पत्ति वास्तविक व्यपारिक लेन-देन से होती है, इस विलेख का निर्माण नकद प्राप्ति हेतु पक्षों को बाध्य करता है। उदाहरणतया: अंकित ने बिन्दु से माल का क्रय किया जिसका भुगतान अंकित बिन्दु द्वारा लिखे गए ड्राफ्ट को स्वीकृत करके स्थगित कर सकता है। जबकि बिन्दु यदि चाहे तो अंकित की स्वीकृति अपने बैंकर से बट्टागत करवाकर तत्काल नकद राशि की व्यवस्था कर सकती है। इससे आशय यह है कि विनिमय विपत्र एवं प्रतिज्ञा-पत्र का प्रयोग बाज़ार से अस्थाई रूप से वित्त प्रयोजन हेतु भी किया जा सकता है। ऐसे विलेख को सहायतार्थ विपत्र भी कहते हैं। क्योंकि इसका प्रयोग आहार्यी द्वारा आहर्ता को सहायता करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए 1 अप्रैल, 2006 को राज तीन माह की अवधि के लिए 10,000 रु. का एक बिल लिखता है जिस पर पाल अपनी स्वीकृति देकर राज की सहायता करता है। उपरोक्त तिथि को राज अपने बैंकर द्वारा 6% प्रति वर्ष की दर से भुनाता है। राज परिपक्वता तिथि से एक दिन पूर्व इस बिल का भुगतान पाल को करता है। पाल बिल की परिपक्वता पर बिल का भुगतान कर देता है।

© NCERT not to be republished

इस संदर्भ में निम्नांकित प्रविष्टियां की जायेंगी:

राज की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	विवरण	ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
2006				
01 अप्रैल	प्राप्य विपत्र खाता नाम		10,000	
	पाल के खाते से			10,000
	(पाल की स्वीकृति प्राप्त)			
01 अप्रैल	बैंक खाता नाम		9,700	
	प्राप्य विपत्र खाते से			9,700
	(पाल की स्वीकृति 6% प्रति वर्ष की दर पर भुनाया)			
03 जुलाई	पाल का खाता नाम		10,000	
	बैंक खाता			10,000
	(निभाव विपत्र का भुगतान)			

पाल की पुस्तक
रोजनामचा

दिनांक	विवरण	ब.पृ.सं.	नाम राशि रु.	जमा राशि रु.
2006				
01 अप्रैल	राज का खाता नाम		10,000	
	देय विपत्र			10,000
	(निभाव विपत्र राज की स्वीकृति)			
03 जुलाई	बैंक खाता नाम		10,000	
	राज के खाते से			10,000
	(राज द्वारा भुगतान)			
	देय विपत्र खाता नाम		10,000	
	बैंक खाते से			10,000
	(निभाव विपत्र की नियुक्ति)			

कभी-कभी सहायतार्थ पक्ष आपसी लाभ के लिए सहायतार्थ विपत्र वित्त उत्पत्ति के लिए सहमत हो जाते हैं। यह निम्नलिखित दो प्रकारों में से किसी एक के द्वारा किया जा सकता है:

(अ) अहर्ता एवं आहार्यी/स्वीकारकर्त्ता धन राशि को स्वीकृत दर पर बांट लेते हैं।

(ब) प्रत्येक पक्ष दूसरे पक्ष पर विपत्र लिखता भी है और स्वीकृत भी करता है।

© NCERT not to be republished

दशा (अ) में अहर्ता एवं आहार्यी द्वारा स्वीकृत अनुपात में बट्टा राशि का भुगतान किया जाता है जबकि दशा (ब) में बट्टे की राशि को बांटा नहीं जाता है बल्कि प्रत्येक पक्ष संपूर्ण धनराशि को भुनाने के पश्चात स्वंय प्राप्त करता है। परिपक्वता पर प्रत्येक पक्ष अपने संसाधनों में से स्वीकृत धनराशि का भुगतान करता है। किन्तु जहां दोनों पक्ष एक विपत्र की धनराशि को आपस में बांटते है उस दशा में बिलकर्त्ता द्वारा परिपक्वता तिथि से पूर्व अपने हिस्से की धनराशि का भुगतान कर दिया जाता है ताकि शेष धनराशि का भुगतान स्वीकारकर्त्ता द्वारा समय पर किया जा सके।

उपरोक्त व्याख्या के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सहायतार्थ/निभाव विपत्र दोनों पक्षों की अस्थाई वित्त का प्रबंध करने में मददगाार होता है।

उदाहरण 9

आशु और मुदित को वित्त की आवश्यकता थी। 1 अक्टूबर, 2005 को आशु ने दो माह को समयावधि के लिए 9,000 रु. का एक विपत्र लिखा। मुदित ने विपत्र पर अपनी स्वीकृति के पश्चात आशु को भेज दिया तथा आशु ने 6% प्रति वर्ष की दर से विपत्र को बैंक से भुनाया और विपत्र राशि का आधा हिस्सा मुदित को दिया। देय तिथि पर आशु ने अपने हिस्से की धनराशि मुदित को वापिस दी और मुदित ने विपत्र का भुगतान सही समय पर किया। उपरोक्त लेन-देनों की प्रविष्टियाँ आशु और मुदित के रोजनामचे में करें।

आशु की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	*विवरण*		*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि रु.*	*जमा राशि रु.*
2006					
1 अक्टूबर	विपत्र प्राप्य खाता	नाम		9,000	
	मुदित खाते से				9,000
	(आपसी सहायतार्थ राशि प्राप्त)				
1 अक्टूबर	बैंक खाता	नाम		8,925	
	बट्टा खाता	नाम		75	
	प्राप्य विपत्र खाते से				9,000
	(विपत्र बैंक द्वारा भुनाया गया)				
1 अक्टूबर	मुदित खाता	नाम		4,500	
	रोकड़ खाते से				4,462.50
	बट्टा खाते से				37.50
	(आधी धन राशि का भुगतान)				
1 अक्टूबर	मुदित खाता	नाम		4,500	
	रोकड़ खाते से				4,500
	(मुदित द्वारा आधी राशि का भुगतान)				

© NCERT not to be republished

मुदित की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
2006				
1 अक्टूबर	आशु का खाता नाम		9,000	
	देय विपत्र खाते से			9,000
	(आपसी निभाव विपत्र स्वीकृत)			
1 अक्टूबर	रोकड़ खाता नाम		44,64.50	
	बट्टा खाता नाम		37.50	
	आशु खाते से			4,500
	(भुनाया गये विपत्र धनराशि प्राप्त)			
4 दिसंबर	रोकड़ खाता नाम		4,500	
	आशु के खाते से			4,500
	(भुगतान हेतु धनराशि प्राप्त)			
4 दिसंबर	देय विपत्र खाता नाम		9,000	
	बैंक खाते से			9,000
	(विपत्र का भुगतान)			

उदाहरण 10

रोहन और रोहित को वित्त की आवश्यकता थी। 1 नवंबर, 2006 को रोहन द्वारा 3 माह की समयावधि के लिए रोहित से 5,000 रुपये का एक ड्राफ्ट स्वीकृत किया और रोहित ने तीन माह की समयावधि के लिए रोहन द्वारा लिखा 4,000 रुपये का ड्राफ्ट स्वीकृत किया। रोहन और रोहित ने दोनों विपत्रों को अपने-अपने बैंको द्वारा क्रमशः 4,800 रुपये तथा 3,850 रुपये में भुनवाया। विपत्र परिपक्वता से पूर्व रोहित ने 1,000 रुपये की अन्तर राशि को भेज दी। देय तिथि पर रोहन और रोहित ने अपनी स्वीकृति की पूर्ति की।

उपरोक्त लेन-देनों की प्रविष्टियाँ रोहन और रोहित के रोजनामचे में कीजिए।

रोहन की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
2006				
01 नवंबर	रोहित का खाता नाम		5,000	
	देय विपत्र खाते से			5,000
	(रोहन की निभान विपत्र पर स्वीकृति)			

© NCERT not to be republished

01 नवंबर	प्राप्य विपत्र खाता नाम रोहित के खाते से (निभाव विपत्र प्राप्त)		4,000	 4,000
01 नवंबर	बैंक खाता नाम बट्टा खाता नाम प्राप्य विक्रय खाते से (निभाव विपत्र को बैंक से भुनाया गया)		3,850 150	 4,000
04 फरवरी	रोकड़ खाता नाम रोहित के खाते से (विपत्र के भुगतान हेतु नकद प्राप्ति)		1,000	 1,000
04 फरवरी	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से (परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान)		5,000	 5,000

रोहित की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*ब.पृ.सं.*	*नाम राशि (रु.)*	*जमा राशि (रु.)*
2006 01 नवंबर	रोहन खाता नाम देय विपत्र खाते से (रोहित द्वारा सहायतार्थ विपत्र पर स्वीकृति)		4,000	 4,000
01 नवंबर	प्राप्य विपत्र खाता नाम रोहन खाते से (सहायतार्थ/निभाव विपत्र प्राप्त)		5,000	 5,000
01 नवंबर	बैंक खाता नाम बट्टा खाता नाम प्राप्य विपत्र खाते से (विपत्र को बैंक से भुनाया गया)		4,800 200	 5,000
2007 04 फरवरी	रोहन खाता नाम रोकड़ खाते से (रोहन को नकद भुगतान)		1,000	 1,000
04 फरवरी	देय विपत्र खाता नाम बैंक खाते से (विपत्र का तथाकथित भुगतान)		4,000	 4,000

© NCERT not to be republished

उदाहरण 11

1 जनवरी, 2006 को सुनील ने अनिल से तीन माह की अवधि के लिए तीन प्रतिज्ञा-पत्र प्राप्त किए। पहला 3,000 रुपए के लिए, दूसरा 4,000 रुपए के लिए और तीसरा 5,000 रुपए के लिए। दूसरा विपत्र अजीत को बेचान किया गया। 4 जनवरी, 2006 को तीसरा विपत्र 4,700 रुपए में बैंक से भुनाया गया। सुनील के रोजनामचे में निम्नवत परिस्थितियों के संदर्भ में प्रविष्टियाँ कीजिए:

* जब परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान किया गया।
* जब परिपक्वता तिथि पर विपत्र अनादृत हुआ।

सुनील की पुस्तक
रोजनामचा

तिथि	विवरण		ब.पृ.सं.	नाम राशि (रु.)	जमा राशि (रु.)
2006 1 जनवरी	प्राप्य विपत्र खाता अनिल के खाते से (3,000 रु., 4,000 रु. और 5,000 रु. के लिए तीन प्रतिज्ञा-पत्र प्राप्त हुए।	नाम		12,000	12,000
1 जनवरी	अजित का खाता प्राप्य विपत्र खाते से (प्रतिज्ञा-पत्र का अजीत को बेचान)	नाम		4,000	4,000
4 जनवरी	बैंक खाता बट्टा खाता प्राप्य विपत्र खाते से (5,000 रु. का विपत्र, 4,700 रु. में बैंक से भुनाया)	नाम नाम		4,700 300	5,000
(i) 4 अप्रैल	रोकड़/बैंक खाता प्राप्य विपत्र खाते से (परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान)	नाम		3,000	3,000
(ii) 4 अप्रैल	अनिल का खाता प्राप्य विपत्र खाते से (परिपक्वता तिथि पर विपत्र अनादृत)	नाम		3,000	3,000
4 अप्रैल	अनिल का खाता अजित के खाते से (अजीत को बेजान विपत्र अनादृत हुआ)	नाम		4,000	4,000

© NCERT not to be republished

4 अप्रैल	अनिल का खाता नाम बैंक खाते से (बैंक से भुनाया गया विपत्र अनादृत हुआ)		5,000	5,000

अध्याय में प्रयुक्त शब्द

- विपत्र का लेखक/बिलकर्त्ता/आहर्त्ता
- विपत्र का स्वीकारकर्त्ता
- राशि पाने वाला
- प्राप्य विपत्र
- देय विपत्र
- विपत्र का अनादरण
- विपत्र पर स्वीकृति
- विपत्र का भुगतान

अधिगम उद्देश्यों के संदर्भ में सारांश

1. *विनिमय विपत्र पराक्रम्य साधन के रूप में:* विनिमय विपत्र के माध्यम से उधार लेन-देन में क्रेता अथवा देनदार को तत्काल भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती वरन् वह एक निश्चित अवधि के लिए देय राशि का विपत्र स्वीकार करता है।
2. *विनिमय विपत्र और प्रतिज्ञा-पत्र का आशय:* विनिमय विपत्र एक शर्त रहित लिखित आदेश होता है, जिसमें उसका लिखने वाला किसी व्यक्ति विशेष को एक निश्चित अवधि को भुगतान का शर्त रहित आज्ञा देता है।
   प्रतिज्ञा-पत्र भी एक लिखित हस्ताक्षर सहित बिना शर्त का पत्र है, जिसमें देनदार निश्चित तिथि पर भुगतान करने की प्रतिज्ञा करता है।
3. *विपत्र और नोट में अंतर:*
   (i) विपत्र लेनदार द्वारा लिखा और देनदार द्वारा स्वीकार किया जाता है। नोट देनदार द्वारा लिखा जाता है।
   (ii) विपत्र में तीन पक्ष होते हैं और नोट पर दो पक्ष होते हैं।
   (iii) वित्तीय स्तर के लिए विपत्र पर स्वीकृति अनिवार्य है, परंतु नोट मे वित्तीय स्तर निहित होता है।
4. *विपत्र की विशेषताएँ एंव लाभ विशेषताएँ*
   - विपत्र लिखित होता है।
   - इसमें राशि के भुगतान की आज्ञा होती है।
   - यह आज्ञा शर्त रहित होती है।
   - इसमें लिखने वाले के हस्ताक्षर होते हैं।
   - इसमें भुगतान की तिथि होती है।
   - इसमें मुद्रांक का होना अनिवार्य है।

© NCERT not to be republished

लाभ –

- इसमें लेनदार और देनदार के मध्य संबंध स्थापित होता है।
- निश्चित शर्तें निहित होती हैं।
- लेनदार को वित्तीय सुविधा प्रदान करता है।
- भुगतान माँग पर अथवा निश्चित अवधि पर देय होता है।
- भुगतान धारक को अथवा उल्लेख किए गए नाम को किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सामान्य रूप से प्रयोग होने वाले दो पराक्रम्य विलेखों का उल्लेख कीजिए।
2. विनिमय विपत्र और प्रतिज्ञा-पत्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. विनिमय विपत्र की चार विशेषताएं बताइए।
4. विनिमय विपत्र के तीन पक्षों का उल्लेख कीजिए।
5. विनिमय विपत्र की परिपक्वता से अपा क्या समझते हैं।
6. विनिमय विपत्र के अनादरण से आप क्या समझते हैं।
7. प्रतिज्ञा-पत्र के पक्षों की व्याख्या कीजिए।
8. विनिमय विपत्र की स्वीकृति से आप क्या समझते हैं।
9. निरकाई का अर्थ समझाइए।
10. विनिमय विपत्र के नवीनीकरण से आप क्या समझते हैं।
11. प्राप्य विपत्र पुस्तक का प्रारूप बनाइए।
12. देय विपत्र पुस्तक का प्रारूप बनाइए।
13. समय से पूर्व विनिमय विपत्र के भुगतान से क्या आशय है।
14. छूट का अर्थ समझाइए।
15. विनिमय विपत्र का प्रारूप बनाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'विनिमय विपत्र एक शर्त रहित आज्ञापत्र है' क्या आप इस वाक्य से सहमत हैं।
2. विनिमय विपत्र के अनादरण और निकराई व्यय के प्रभाव बताइए।
3. उदाहरण सहित परिपक्वता तिथि की गणना प्रक्रिया को समझाइए।
4. विनिमय विपत्र और प्रतिज्ञा पत्र में अंतर स्पष्ट करें।
5. विनिमय विपत्र के समय से पूर्व भुगतान का लेनदार और देनदार के लिए लाभ और उद्देश्य बताइए।
6. प्राप्य विपत्र पुस्तक बनाने के उद्देश्य और लाभ बताइए।
7. देय विपत्र पुस्तक बनाने के उद्देश्य और लाभ बताइए।

© NCERT not to be republished

आंकिक प्रश्न

परिपक्वता तिथि पर भुगतान

1. 1 जनवरी, 2006 को राव ने रेड्डी को 10,000 रु. का माल बेचा। रेड्डी ने आधी राशि का भुगतान तत्काल किया और शेष राशि के लिए 30 दिन की अवधि का एक विपत्र स्वीकार किया। परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान कर दिया गया।
   उपरोक्त लेन-देनों की राव और रेड्डी के रोजनामचे में प्रविष्टियाँ कीजिए और राव की पुस्तक में रेड्डी का खाता और रेड्डी की पुस्तक में राव का खाता बनाइए।
2. 1 जनवरी, 2006 को शंकर ने पार्वती से 8,000 रु. का माल क्रय किया और पार्वती को तीन माह की अवधि के लिए पार्वती को एक प्रतिज्ञा-पत्र लिखा। परिपक्वता तिथि के दिन भारत-सरकार द्वारा पराक्रम्य विलेख अधिनियम 1881 के अंतर्गत अवकाश घोषित किया। चूँकि पार्वती अधिनियम के परिपक्वता तिथि प्रावधान से अनभिज्ञ थी, इसलिए उसने विपत्र राशि भुगतान के लिए अपने अधिक्ता को दे दिया। जिसने विपत्र को नियमानुसार भुगतान के लिए प्रस्तुत कर भुगतान प्राप्त किया। पार्वती को विपत्र की राशि का तत्काल भुगतान प्राप्त हुआ। पार्वती और शंकर के रोजनामचे में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए।
3. 5 जनवरी, 2006 को विशाल ने मंजू को 7,000 रु. का माल विक्रय किया तथा मंजू पर दो माह की अवधि के लिए एक विनिमय विपत्र लिखा। मंजू ने विपत्र पर अपनी तत्काल स्वीकृति दी और विपत्र विशाल को वापिस कर दिया। विशाल ने विपत्र को 12% प्रतिवर्ष की दर से बैंक से भुना लिया। परिपक्वता तिथि पर मंजू ने विपत्र पर अपनी स्वीकृति पूर्ण की।
   उपर्युक्त लेन-देनों का विशाल और मंजू के रोजनामचों में प्रविष्टियाँ कीजिए।
4. 1 फरवरी, 2006 को जॉन ने जिमी से 15,000 रु. का माल क्रय किया और 5,000 रु. की राशि का तत्काल चेक से भुगतान किया तथा शेष राशि के लिए जिमी द्वारा लिखा विपत्र स्वीकृत किया। यह विपत्र 40 दिन की अवधि पर देय था। परिपक्वता तिथि से पाँच दिन पूर्व जिमी ने विपत्र संग्रह हेतु बैंक भेजा। परिपक्वता तिथि पर बैंक द्वारा बिल जॉन से भुगतान के लिए पेश किया गया तथा तदानुसार जिमी को सूचित किया गया। जॉन और जिमी के राजनामचों में प्रविष्टियाँ कीजिए। जिमी की पुस्तकों में जॉन का खाता और जॉन की पुस्तकों में जिमी का खाता बनाइए।
5. 15 जनवरी, 2006 को करतार ने 30,000 रु. का माल भगवान को बेचा और उस पर 10,000 रु. के तीन विपत्र लिखे, जो कि एक माह, दो माह तथा तीन माह की अवधि पर देय थे। पहला विपत्र करतार ने परिपक्वता तिथि तक अपने पास रखा। दूसरा बिल करतार ने अपने लेन-देन रत्ला को बेचान किया। तीसरा बिल करतार ने तत्काल 6% प्रति वर्ष की दर से बैंक से भुनाया। भगवान द्वारा तीनों विपत्रों का भुगतान परिपक्वता तिथि पर कर दिया गया। करतार और भगवान के रोजनामचों में प्रविष्टियाँ कीजिए तथा खाते बनाइए।
6. 1 जनवरी, 2006 को सुनील ने अरुण से 30,00 रु. का उधार माल खरीदा। सुनील ने 50% राशि का तत्काल भुगतान किया, जिस पर अरुण ने 2% की नकद छूट दी। शेष राशि के लिए सुनील ने 20 दिन की अवधि के लिए प्रतिज्ञा-पत्र लिखा। चूँकि परिपक्वता तिथि के दिन सार्वजनिक अवकाश था, इसलिए अरुण ने पराक्रम्य विलेख अधिनियम 1881 के परिपक्वता प्रावधान के अंतर्गत कार्यकारी दिवस पर प्रतिज्ञा-पत्र पेश किया, जिसका समय पर पूर्ण भुगतान कर दिया गया।

© NCERT not to be republished

बताइए, वरुण द्वारा किस तिथि पर प्रतिज्ञा-पत्र प्रस्तुत किया गया। उपर्युक्त लेनदेन को अरुण और सुनील के रोजनामचों में प्रविष्टि कीजिए।

7. दर्शन ने वरुण को 40,000 रु. का उधार माल बेचा तथा दो माह की अवधि के लिए एक विपत्र लिखा। वरुण ने विपत्र पर अपनी स्वीकृति दी और दर्शन को विपत्र वापिस भेज दिया। परिपक्वता तिथि पर विपत्र का भुगतान कर दिया।
निम्नलिखित परिस्थितियों में दर्शन और वरुण के रोजनामचों में प्रविष्टियाँ कीजिए।
- जब दर्शन द्वारा विपत्र परिपक्वता तिथि तक स्वयं के पास रखता है।
- जब दर्शन 6% प्रतिवर्ष की दर से विपत्र को बैंक से भुना लेता है।
- जब दर्शन विपत्र को तत्काल अपने लेनदार सुरेश को बेचान कर देता है।
- जब दर्शन परिपक्वता तिथि से तीन दिन पूर्व 10 विपत्र को संग्रह हेतु बैंक भेजता है

बेचान/अनादरण/समयपूर्व भुगतान

8. बंसल ट्रेडर्स माल के क्रय पर अंकित मूल्य का 10% की व्यावसायिक छूट देते हैं। मोहन ट्रेडर्स जो एक फुटकर व्यापारी हैं, ने बंसल ट्रेडर्स से निम्नलिखित माल का क्रय किया:

दिनांक	राशि रु.
21.12.2006	1,000
26.12.2006	1,200
28.12-2006	2,000
31.12.2006	5,000

सभी उपर्युक्त क्रय के लिए मोहन ट्रेडर्स ने बंसल ट्रेडर्स को 30 दिन की अवधि के लिए प्रतिज्ञा-पत्र लिखे। दिनांक 21.12.2006 के माल क्रय के लिए लिखा प्रतिज्ञा-पत्र बंसल ट्रेडर्स ने परिपक्वता तिथि तक स्वयं के पास रखा। दिनांक 26.12.2006 के माल क्रय के लिए लिखा प्रतिज्ञा-पत्र बंसल ट्रेडर्स ने 12% प्रतिवर्ष की दर से भुना लिया। दिनांक 25.1.2006 को बंसल ट्रेडर्स ने दिनांक 28.12.2006 के लिए लिखा प्रतिज्ञा-पत्र का अपने लेनदार ड्रीम सोप्स को 1,900 रु. के पूर्ण भुगतान के लिए बेचान कर दिया। दिनांक 31.12.2006 के माल क्रय के लिए लिखा प्रतिज्ञा-पत्र संग्रह हेतु बैंक भेज दिया। मोहन ट्रेडर्स द्वारा सभी प्रतिज्ञा पत्रों को समय पर भुगतान कर दिया गया।

उपर्युक्त सभी लेन देनों की बंसल ट्रेडर्स और मोहन ट्रेडर्स के रोजनामचों में प्रविष्टियाँ कीजिए तथा बंसल ट्रेडर्स की पुस्तकों में मोहन ट्रेडर्स का खाता और मोहन ट्रेडर्स की पुस्तकों में बंसल ट्रेडर्स का खाता बनाइए।

9. 1 फरवरी, 2005 को नारायण ने रविंद्रन से 25,000 रु. का उधार माल क्रय किया। रविंद्रन ने उपर्युक्त राशि के लिए 30 दिन की अवधि का एक विपत्र लिखा। परिपक्वता तिथि पर नारायण ने विपत्र का अनादरण किया। निम्नवत परिस्थितियों में रविंद्रन और नारायण की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ कीजिए-
- जब रविंद्रन परिपक्वता तिथि तक विपत्र स्वयं के पास रखता है।
- जब रविंद्रन तत्काल 6% प्रतिवर्ष की दर से विपत्र बैंक से भुना लेता है।
- जब रविंद्रन विपत्र का अपने लेनदार गणेशन को बेचान करता है।
- जब रविंद्रन परिपक्वता तिथि से कुछ समय पूर्व विपत्र संग्रह हेतु बैंक भेजता है।

© NCERT not to be republished

10. 13 फरवरी, 2006 को रवि ने राज को 40,000 रु. का माल उधार बेचा, तथा राज पर चार विपत्र लिखें। 5,000 रु. की राशि का पहला विपत्र एक माह की देय भुगतान के लिए लिखा गया। दूसरा विपत्र 10,000 रु. के लिए 40 दिन की अवधि के लिए लिखा गया। तीसरा विपत्र 12,000 रु. की राशि के लिए तीन माह की अवधि के लिए और चौथा बिल शेष राशि के लिए 19 दिन की अवधि के लिए लिखा गया। राज ने सभी विपत्र स्वीकार किए और उन्हें स्वीकृति पश्चात रवि को वापिस भेज दिए। रवि ने पहला विपत्र 6% प्रति वर्ष की दर से भुना लिया। दूसरा विपत्र का अपने लेनदार अजय को 10,200 रु. के पूर्ण भुगतान के लिए बेचान किया। तीसरा विपत्र रवि ने परिपक्वता तिथि तक स्वयं के पास रखा रवि ने चौथा बिल परिपक्वता तिथि से पाँच दिन पूर्व संग्रह हेतु बैंक भेज दिया। राज द्वारा चारों विपत्रों का अनादरण हुआ। विपत्र के अनादरण के तीन दिन पश्चात राज ने रवि को 12% प्रतिवर्ष की ब्याज पर से नकद भुगतान किया।

उपर्युक्त लेन-देनों का रवि, राज, अजय के रोजनामचों में प्रविष्टियाँ कीजिए। रवि की पुस्तकों में राज और अजय का खाता बनाइए।

11. 1 जनवरी, 2006 को मुस्कान ने नेहा से 20,000 रु. का उधार माल खरीदा और दो माह की अवधि के लिए नेहा ने मुस्कान पर एक विपत्र लिखा। परिपक्वता तिथि से एक माह पूर्व मुस्कान ने नेहा से 12% प्रति वर्ष की छूट पर समय पूर्व भुगतान का अनुरोध किया जिस पर नेहा ने अपनी सहमति दी।

नेहा और मुस्कान को रोजनामचों में उपर्युक्त लेनदेनों की प्रविष्टियाँ कीजिए।

12. 15 जनवरी, 2006 रघु ने देवेन्द्र को 35,000 रु. का माल बेचा और देवेन्द्र पर 3 माह की अवधि के लिए विनिमय विपत्र लिखे। पहला विपत्र 1 माह की अवधि के लिए 5,000 रु. के लिए, दूसरा विपत्र 3 माह की अवधि के लिए 20,000 रु. के लिए, तीसरा विपत्र शेष राशि के लिए 4 माह की अवधि के लिए लिखा। रघु ने प्रथम विपत्र अपने लेनदार दीवान को 5,200 रु. के पूर्ण भुगतान के लिए बेचान किया। दूसरा विपत्र रघु ने 6% प्रति वर्ष की दर से भुनाया तथा तीसरा विपत्र रघु ने परिपक्वता तिथि तक अपने पास रखा। परिपक्वता तिथि पर देवेन्द्र द्वारा प्रथम बिल का अनादरण हुआ तथा 30 रु. निकराई व्यय के रूप में खर्च हुए। देवेन्द्र द्वारा स्वीकृत दूसरा विपत्र भी अनादृत हुआ तथा उस पर 50 रु. निकराई व्यय के रुप में खर्च हुए। देवेन्द्र द्वारा स्वीकृत दूसरा विपत्र भी अनादृत हुआ तथा उस पर 50 रु. निकराई व्यय खर्च हुए। रघु ने तीसरा विपत्र परिपक्वता तिथि से चार दिन पूर्व बैंक संग्रह हेतु भेजा। तीसरा विपत्र भी अनादृत हुआ जिसपर 200 रु. निकराई व्यय हुआ। तीसरे विपत्र के अनादरण होने के पाँच दिनों के पश्चात् देवेन्द्र ने रघु को 1,000 रु. की ब्याज राशि सहित पूर्ण भुगतान कर दिया, जिसके लिए उसे बैंक से लघु ऋण राशि लेनी पड़ी।

रघु, देवेन्द्र और दीवान की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए तथा रघु की पुस्तक में देवेन्द्र का खाता और देवेन्द्र की पुस्तकों में रघु का खाता बनाइए।

13. 15 जनवरी, 2006 को विमल ने कमल से 25,000 रु. का उधार माल खरीदा और उक्त राशि के लिए दो माह की भुगतान अवधि का एक विपत्र लिखा।

निम्नलिखित परिस्थितियों में कमल और विमल की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ कीजिए।

- जब कमल परिपक्वता तिथि तक विपत्र स्वयं के पास रखता है।
- जब कमल 6% प्रतिवर्ष की दर से विपत्र बैंक से भुना लेता है।

© NCERT not to be republished

- जब कमल विपत्र का बेचान अपने लेनदार शरद को करता है।
- परिपक्वता तिथि से पाँच दिन पूर्व कमल विपत्र को संग्रह हेतु बैंक भेजता है।

14. 17 जनवरी 2006 को अब्दुल्ला ने ताहिर को 18,000 रु. का उधार माल बेचा और उक्त राशि के लिए 45 दिनों का एक विपत्र लिखा। इसी तिथि पर ताहिर ने विपत्र को स्वीकृत कर अब्दुल्ला को वापिस भेजा। देय तिथि पर अब्दुल्ला द्वारा बिल प्रस्तुत करने पर बिल अनादृत हुआ और अब्दुल्ला ने 40 रु. निकराई व्यय दिये। विपत्र के अनादरण के पाँच दिनों के पश्चात ताहिर ने 18,700 रु. के ऋण का भुगतान कर दिया जिसमें ब्याज और निकराई व्यय राशि सम्मिलित थी। उपरोक्त लेन-देनों की प्रविष्टियाँ अब्दुल्ला और ताहिर की पुस्तकों में करें। साथ ही अब्दुल्ला की पुस्तकों में ताहिर का खाता और ताहिर की पुस्तकों में अब्दुल्ला का खाता बनाएँ।

15. 2 मार्च, 2006 को आशा ने 19,000 रु. का माल निशा को उधार बेचा। निशा ने 4,000 रु. का तत्काल भुगतान किया और शेष राशि के लिए तीन माह की अवधि का एक विपत्र लिखा। आशा ने विपत्र बैंक से भुनाया। परिपक्वता तिथि पर निशा के विपत्र अनादृत हुआ तथा बैंक ने 30 रु. निकराई व्यय किए। आशा और निशा के रोजनामचों में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए।

16. 2 फरवरी, 2006 को वर्मा ने शर्मा से 17,500 रु. का माल क्रय किया। वर्मा ने 2,500 रु. का तत्काल भुगतान किया और शेष राशि के लिए 60 दिन की भुगतान अवधि का एक प्रतिज्ञा पत्र लिखा। शर्मा ने अपने लेनदार गुप्ता को प्रतिज्ञा-पत्र का बेचान 15,400 रु. के पूर्ण भुगतान के रूप में किया। परिपक्वता तिथि पर गुप्ता द्वारा विपत्र पेश करने पर उसका अनादरण हुआ। गुप्ता ने 5,000 रु. निकराई व्यय किए। उसी दिन गुप्ता ने वर्मा को प्रतिज्ञा-पत्र ने अनादरण हुआ। गुप्ता ने 5,000 रु. निकराई व्यय किए। उसी दिन गुप्ता ने वर्मा को प्रतिज्ञा-पत्र के अनादरण की सूचना दी। शर्मा ने चेक द्वारा गुप्ता को 15,500 रु. का भुगतान किया जिसमें निकराई व्यय और ब्याज की राशि शामिल थी। वर्मा ने शर्मा को उक्त राशि का भुगतान चेक से किया। शर्मा, वर्मा और गुप्ता के रोजनामचों में प्रविष्टयाँ कीजिए और वर्मा और गुप्ता का खाता शर्मा की पुस्तक में, शर्मा का खाता वर्मा की पुस्तक में और शर्मा का खाता गुप्ता की पुस्तक में दिखाइए।

17. 1 मार्च, 2006 को लिलि ने मैथ्यू को 12,000 रु. का उधार माल बेचा और उक्त राशि के लिए 2 माह की अवधि का एक विपत्र लिखा। लिलि ने तत्काल विपत्र को 9% प्र. व. की दर से भुना लिया। चूँकि परिपक्वता तिथि एक गैर-व्यावसायिक दिवस था अत: लिलि ने विपत्र 1 दिन पूर्व अधिनियम के प्रावधान के अनुसार प्रस्तुत किया। मैथ्यू द्वारा विपत्र अनादृत हुआ और लिलि ने 45 रुपए निकराई के रूप में व्यय किए। पाँच दिनों के पश्चात मैथ्यू ने चेक द्वारा पूर्ण भुगतान कर दिया जिसमें 12% प्र. व. की दर से ब्याज राशि सम्मिलित थी।

    उपर्युक्त लेनदेनों की रोजनामचे में प्रविष्टियाँ कीजिए तथा लिलि की पुस्तक में मैथ्यू का खाता और मैथ्यू की पुस्तक में लिलि का खाता बनाइए।

18. दिनांक 1.2.2006 कपिल ने गौरव से 21,000 रु. का उधार माल खरीदा और उक्त राशि के लिए गौरव ने कपिल पर एक विपत्र लिखा। विपत्र एक माह की अवधि पर देय था। दिनांक 25.2.2006 को गौरव ने विपत्र संग्रह हेतु बैंक भेजा। परिपक्वता तिथि पर बैंक ने नियमानुसार विपत्र पेश किया जिसे कपिल ने अनादृत किया। बैंक ने 100 रु. निकराई व्यय किए। कपिल और गौरव की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ दें।

© NCERT not to be republished

19. 14.2.2006 को रश्मि ने 7,500 रुपए का माल अलका को बेचा। अलका ने 500 रु. का नकद भुगतान किया और शेष राशि के लिए दो माह की अवधि का विनिमय विपत्र स्वीकार किया। 10.4.2006 को अलका ने रश्मि से विपत्र रद्द करने का अनुरोध किया। अलका ने दोबारा रश्मि को 2,000 रु. नकद स्वीकार और नया विपत्र लिखने का अनुरोध किया जिसमे 500 रु. की ब्याज राशि सम्मिलित है। रश्मि ने अलका का अनुरोध स्वीकार करते हुए 2 माह की अवधि के लिए देय राशि का एक नया विपत्र लिखा। विपत्र का भुगतान परिपक्वता तिथि पर पूर्णत: कर दिया गया।

    रश्मि और अलका की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए तथा अलका की पुस्तकों में रश्मि का खाता और रश्मि की पुस्तकों में अलका का खाता बनाइए।

20. 1.12.2006 को निखिल ने अखिल को 23,000 रु. का उधार माल बेचा और अखिल पर 2 माह की अवधि के लिए एक विपत्र लिखा। अखिल ने विपत्र स्वीकार किया और निखिल को वापिस भेज दिया। निखिल ने विपत्र को बैंक से 12% प्रति वर्ष की दर से भुनाया। देय तिथि पर अखिल ने विनिमय विपत्र को अनादृत किया और बैंक ने 100 रु. निकारई व्यय के रुप में खर्च किए। अखिल ने निखिल से 10% ब्याज की दर सहित नया विपत्र लिखने का अनुरोध किया। नया विपत्र 2 माह की अवधि के लिए लिखा गया। परिपक्वता तिथि से 1 सप्ताह पूर्व, अखिल ने निखिल से नया विपत्र रद्द करने का अनुरोध किया। इसके अतिरिक्त अखिल ने निखिल से 10,000 रु. नकद स्वीकार करने और शेष राशि के लिए तीसरा विपत्र 500 रु. की ब्याज राशि लिखने का अनुरोध किया, जिसे निखिल ने स्वीकार कर लिया। तीसरा विपत्र 1 माह की अवधि पर देय था। अखिल ने इस विपत्र का भुगतान परिपक्वता तिथि पर किया।

    अखिल और निखिल की पुस्तकों में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए और निखिल का खाता अखिल की पुस्तकों में और अखिल का खाता निखिल की पुस्तकों में दर्शाइए।

21. 1 जनवरी, 2006 को विभा ने सूधा को 18,000 रु. का माल बेचा और सुधा पर 2 माह की अवधि के लिए एक विपत्र लिखा। विपत्र पर सुधा ने अपनी स्वीकृति दी और विभा को लौटा दिया। विभा ने तत्काल इस विपत्र को अपनी एक लेनदार गीता के नाम पर बेचान किया। किसी कारणवश सुधा ने विभा से विपत्र रद्द करने और 200 रु. की ब्याज राशि सहित एक नया विपत्र लिखने का अुनरोध किया। विभा ने सुधा के अुनरोध को स्वीकार कर लिया। विभा ने गीता से विपत्र वापिस ले लिया तथा गीता को नकद भुगतान कर विपत्र रद्द कर दिया। इसके पश्चात विभा ने सुधा पर एक नया विपत्र लिखा।

    इस विपत्र की अवधि एक माह थी। नया विपत्र का सुधा द्वारा परिपक्वता तिथि पर भुगतान कर दिया गया। विभा की पुस्तक में रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

22. 1 जनवरी, 2006 को हर्ष ने एक माह की समयावधि के लिए 10,000 रुपये का तनु द्वारा लिखा एक विपत्र स्वीकृत किया उसी दिन तनु ने विपत्र को 8% प्रतिवर्ष की दर से भुनवाया। देय तिथि पर तनु द्वारा विपत्र प्रकट किए जाने पर हर्ष द्वारा संपूर्ण भुगतान कर दिया गया। तनु और हर्ष की पुस्तकों मे रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

23. रितेश और नैना को अस्थाई रूप से वित्त की आवश्यकता थी। 1 अगस्त, 2005 को रितेश ने नैना पर चार माह की अवधि के लिए 12,000 रुपए की राशि का विपत्र लिखा जिसे नैना ने स्वीकृत कर रितेश को वापस भेज दिया। रितेश ने 8% प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से विपत्र को भुनवाया तथा

© NCERT not to be republished

आधी धनराशि नैना को दी। देय तिथि पर रितेश ने अपेक्षित धनराशि नेहा को भेजी। नेहा ने पूर्ण रूप से बिल का भुगतान कर दिया। उपरोक्त लेन-देनों की प्रवृष्टियां दोनों के रोजनामचे में कीजिए।

24. 1 जनवरी, 2006 को भानु और रमन ने आपसी लाभ के लिए एक दूसरे पर तीन माह की समयावधि के लिए 8,000 रुपये का विपत्र लिखा। 2 जनवरी को उन्होंने अपने बैंकों से विपत्रों को 5% प्रतिवर्ष को दर से भुनाया। देय तिथि पर दोनो ने अपनी स्वीकृति की पूर्ति की भानु और रमन के रोजनामचे में प्रवृष्टियां दिखाएं।

25. 1 नवंबर, 2005 को सोनिया ने सनी पर तीन माह की समयावधि के लिए 15,000 रुपये की राशि का विपत्र लिखा जिसे सनी ने स्वीकृत कर सोनिया को लौटा दिया। सोनिया ने 8% प्रतिवर्ष की दर से विपत्र को अपने बैंकर से भुनवाया। प्राप्त धनराशि का विभाजन सोनिया और सनी के मध्य क्रमशः 2/3, 1/3 के अनुपात में किया गया देय तिथि पर सोनिया ने अपेक्षित राशि सनी को भेज दी। सनी निश्चित समय पर बिल का भुगतान नहीं कर सका जिसके परिणाम-स्वरूप सोनिया ने संपूर्ण बिल का भुगतान किया। सनी द्वारा सोनिया को 100 रुपये की ब्याज राशि सहित देय धनराशि के लिए नयी स्वीकृति दी तथा देय तिथि पर अपनी स्वीकृति की पूर्ति की। सनी और सोनिया के रोजनामचों में प्रवृष्टियां दिखाइए।

26. 1 जनवरी, 2006 को गौतम के लेनदारों और देनदारों का वितरण निम्न प्रकार था-

	देनदार रु.	लेनदार रु.
बाबू	5,000	-
चंद्रकला	8,000	-
किरण	13,500	-
अनिता	14,000	-
अंजू	-	5,000
शीबा	-	12,000
मंजू	-	6,000

जनवरी माह में निम्न लेन-देन किए गए-

2 जनवरी	48,000 रु. के पूर्ण भुगतान के लिए बाबू पर दो माह की अवधि के लिए एक विपत्र लिखा। बाबू ने विपत्र स्वीकार कर 05.01.06 को लौटा दिया।
4 जनवरी	बाबू के विपत्र को 4,750 रु. पर भुना लिया गया।
8 जनवरी	चंद्रकला ने 3 माह की अवधि के लिए 8,000 रु. की राशि का प्रतिज्ञा-पत्र लिखा।
10 जनवरी	चंद्रकला के प्राप्त प्रतिज्ञा-पत्र को 7,900 रु. पर भुना लिया गया।
12 जनवरी	आगामी दो माह पर देय तिथि के लिए शीबा का ड्राफ्ट स्वीकृत।
22 जनवरी	आगामी 2 माह की देय तिथि के लिए अनिता से प्रतिज्ञा-पत्र प्राप्त।
23 जनवरी	अनिता से प्राप्त प्रतिज्ञा-पत्र का मंजू को बेचान।
25 जनवरी	आगामी तीन माह की देय तिथि के लिए मंजू का ड्राफ्ट स्वीकार।
29 जनवरी	किरण ने 2,000 रु. का नकद भुगतान किया और शेष राशि के लिए 3 माह पर देय एक प्रतिज्ञा-पत्र भेजा।

उपर्युक्त लेन-देन का उपर्युक्त सहायक पुस्तकों में अभिलेखन कीजिए।

© NCERT not to be republished

स्वयं जाँचिए की जाँच सूची

स्वयं जाँचिए - 1

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) सत्य (vi) असत्य
(vii) सत्य (viii) असत्य (ix) असत्य (x) असत्य

स्वयं जाँचिए - 2

(1) स्वीकारकर्त्ता (2) बेचान (3) लेखक (4) बेचानकर्त्ता

स्वयं जाँचिए - 3

(i) पराक्रम्य (ii) आहर्ता अहार्थी (iii) देनदार लेनदार (iv) तीन (v) दो
(vi) आहार्यी (vii) हुंडी (viii) परिपक्वता, 3 दिन

© NCERT not to be republished